अंक 8

वर्ष 2017

टी.ई.सी.

संचारिका

वार्षिक गृह पत्रिका

www.tec.gov.in

भारत सरकार
दूरसंचार विभाग
दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र
खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली – 110001

हिंदी पखवाड़ा 2016

शुभारंभ

संदेश

प्रिय पाठकों,

यह खुशी की बात है कि हमारी हिंदी गृह पत्रिका "संचारिका" के आठवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है । यह इस बात का संकेत है कि तमाम तकनीकी कार्यों के साथ–साथ यह कार्यालय भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रति भी उतना ही जागरूक है । कार्यालय के कार्मिकों की जिस प्रकार से हिंदी लेखन में रुचि बढ़ रही है वह निस्संदेह प्रशंसनीय है।

आज के वैश्विक एवं उदारीकृत अर्थव्यवस्था के युग में नई पीढ़ी को अपनी भाषा के साथ जोड़ने के प्रयोजन से यह आवश्यक है कि राजभाषा हिंदी एवं भारतीय भाषाओं में पर्याप्त साहित्य और वैज्ञानिक, तकनीकी एवं रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी हुई जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध हो। आज की नई पीढ़ी हर तरह की सूचना एवं जानकारी इंटरनेट से ही खोजती है।

माननीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी का यह कथन निश्चय ही अनुकरणीय है कि "किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्रप्रेम को भी मजबूत बनाता है"।

आज हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा से आगे बढ़कर विश्वभाषा बनने की तैयारी कर रही है। इसमें आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और उसमें सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए पत्रिका एक महत्वपूर्ण माध्यम है। इस पत्रिका में विभिन्न विषयों पर ज्ञानवर्धक लेख, सुंदर कविताएं तथा अन्य रुचिकर लेख गागर में सागर हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं तथा सभी को मेरा यही संदेश है कि वे इस कार्य को जारी रखें।

मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में जहां एक ओर लेखन प्रतिभा बढ़ा कर उनके विचारों को मुखरित करेगी, वहीं दूसरी ओर उनमें अधिकाधिक सरकारी कार्य हिंदी में करने की प्रवृति भी विकसित करेगी । इसी के साथ आशा करते हैं कि इस अंक पर भी आप पूर्व की तरह अपनी अमूल्य प्रतिक्रियाओं से अवगत कराते रहेंगे।

(देबी प्रसाद डे)
कार्यालय प्रमुख एवं वरिष्ठ उप महानिदेशक
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

संपादकीय

प्रिय साथियों,

"टी.ई.सी. संचारिका" का वर्तमान अंक अपने प्रबुद्ध पाठकों को सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है ।

हिंदी विश्व की एक प्राचीन, समृद्ध तथा महान भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है। चीनी भाषा के बाद हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली, विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। कंप्यूटर के इस युग में हिंदी भाषा भी पीछे नहीं है। यूनिकोड के साथ इसका श्रेय मैं गूगल वॉइस टाइपिंग को भी देना चाहूँगा। गूगल वॉइस टाइपिंग में एक बार अभ्यस्त हो गये तो मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि आप डिक्टेशन चाहे वह हिंदी में हो या अँग्रेजी में इसी माध्यम से करना चाहेंगे। पाठकों की जानकारी हेतु इस अंक में हिंदी के ई–टूल्स के प्रयोग से संबंधित एक लेख हमारे कार्यालय के कनिष्ठ अनुवादक द्वारा संकलित किया गया है, इसी तरह कैशलेश ट्रान्जैक्शन पर भी एक उपयोगी लेख उपलब्ध है।

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र एक तकनीकी कार्यालय है इसके बावजूद कार्यालय में हिंदी लेखन का प्रचलन बढ़ रहा है। इस पत्रिका में कई रोचक गद्य एवं पद्य का संकलन कर इसको पठनीय बनाने का प्रयास किया गया है। मैं उन सभी लेखकों, पत्रिका के प्रकाशन में संरक्षक एवं मार्गदर्शक और सहयोगीगणों को बधाई देता हूँ जिनके प्रयास से पत्रिका का यह नया अंक सामने आया। मेरी यह कामना है कि आप लोग इसी प्रकार लिखते रहें। यह दूसरों को भी प्रोत्साहन देने का कार्य करेगा।

आशा है, पाठकगण इस अंक को भी रोचक, ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं सुरुचिपूर्ण पाएंगे। पत्रिका को और बेहतर एवं रोचक बनाने हेतु आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

सुनील पुरोहित
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

संरक्षक एवं मार्गदर्शक
श्री देबी प्रसाद डे
कार्यालय प्रमुख एवं
वरिष्ठ उप महानिदेशक

उप संरक्षक
श्री बाल किशन
उप महानिदेशक (टी. एंड ए.)

संपादक
श्री सुनील पुरोहित
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)

सह संपादक
श्री राजेन्द्र प्रसाद
निदेशक (एन.जी.एस.)

सहयोगी गण
श्री संजीव नारंग
श्री वी. पी. अजनसोंडकर
श्री हर्ष शर्मा
श्री राजेश त्रिपाठी
श्री अमरदीप

: नोट :
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं।

विषय सूची

क्रं.सं.	रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	माँ शारदा की स्तुति	राजेश कुमार	4
2.	हमारी संस्कृति	सुधीर भण्डारी	5
3.	गीता सार	रेखा	11
4.	गैरहाज़िर कन्धे	हर्ष शर्मा	12
5.	एक ही है	राकेश बेदी	13
6.	ये दुनिया अजीब मेला है	आरती	14
7.	जीवन की वास्तविकता	राजेश कुमार मीना	15
8.	माँ	राजेश कुमार मीना	15
9.	अष्ट सिद्धि नव निधि	शिव चरण	16
10.	बस एक कदम और	नीतू सिंह	17
11.	जश्ने उम्मीद	राजेंद्र पी. सोनवणे	17
12.	पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव	सुमित रस्तोगी	18
13.	मेहनत की कीमत	चितरंजन	20
14.	बड़े बाबू	जितेन्द्र कुमार मीना	21
15.	स्वाभिमान	राजेश कुमार मीना	21
16.	जीवन में लक्ष्य का होना ज़रूरी क्यों हैं	नीतू सिंह	22
17.	कैशलेश ट्रान्जैक्शन	हर्ष शर्मा	24
18.	मैंने माँ को देखा है	पोलसन	27
19.	वृक्ष से जीवन है	वांशी अस्थाना	28
20.	समाज	प्रणय दिवाकर	29
21.	स्त्री–विमर्श	नूपुर शर्मा	31
22.	मुक्ति	मनोरंजन	32
23.	बिटिया	अमर दीप	32
24.	जांचें हिंदी की वर्तनी	हर्ष शर्मा	33
25.	आतंकवाद	दिव्या शर्मा	34
26.	दिले नादान	श्रीमती सुमित्रा जाखड़	34
27.	हिंदी ई–टूल्स का प्रयोग	अमर दीप	35
28.	गज़ल	मनोरंजन	38
29.	युवा शक्ति के प्रतीक – स्वामी विवेकानंद	राजेश त्रिपाठी	39
30.	मिल गयी ज़िन्दगी	अवधेश सिंह	41
31.	ज़िन्दगी क्या है	अवधेश सिंह	41
32.	एक कविता हर माँ के नाम	ईश्वर सिंह	41
33.	बुंदेलखंड	विवेक कृष्ण वर्मा	43
34.	हिंदी पखवाड़े का आयोजन		44
35.	हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियागिताएं		48
36.	हिंदी कार्यशाला		49
37.	क्षेत्रीय दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र (पश्चिमी क्षेत्र) मुबंई		50
38.	टीईसी पोर्टल का शुभारंभ		51
39.	राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान		52

माँ शारदा की स्तुति

माँ शारदे! कहाँ तू वीणा बजा रही है।
किस मंजु ज्ञान से तू जग को लुभा रही है।।

किस भाव में भवानी तू मग्न हो रही है।
विनती नहीं हमारी क्यों माँ तू सुन रही है।।

हम दीन बाल कब से विनती सुना रहें हैं।
चरणों में तेरे माता! हम सिर झुका रहे हैं।।

अज्ञान तुम हमारा माँ शीघ्र दूर कर दो।
द्रुत ज्ञान शुभ्र हममें ओ वीणा पाणि भर दो।।

बालक सभी जगत के, सूत मातु! हैं तुम्हारे।
प्राणों से प्रिय तुम्हें हैं, हम पुत्र सब दुलारे।।

हमको दयामयी! ले निज गोद में पढाओ।
अमृत जगत का हमको, माँ शारदा पिलाओ।।

मातेश्वरी ! सुनो अब सुंदर विनय हमारी।
कर दया दृष्टि हर लो, बाधा जगत की सारी।।

राजेश कुमार
प्रोटोकॉल अधिकारी (प्रशासन)

हमारी संस्कृति

"दीप प्रज्वलन"

प्राचीन काल से भारत में दीपक जलाने की प्रथा चली आ रही है। हमारे बड़े बुजुर्ग उषाकाल या फिर संध्या काल या दोनों ही समय प्रभु के सामने दीपक जलाते हैं। कुछ घरों में यह अखंड दीप के रूप में प्रज्वलित रहता है। प्रत्येक मांगलिक कार्य, धार्मिक पूजन तथा दैनिक पूजन का प्रारम्भ दीपक जलाकर ही किया जाता है जोकि उस अवसर के अंत तक कायम रखा जाता है।

हम दीपक क्यों जलाते हैं?

प्रभु चैतन्यशील हैं जो कि सभी प्रकार की स्फूर्ति एवं ज्ञान का स्रोत है। रोशनी भी ज्ञान का प्रतीक है जो अंधकार एवं अज्ञान को दूर करती है। अतः रोशनी को हम प्रभु के रूप में पूजते हैं, जिस प्रकार प्रकाश अंधकार को दूर करता है, उसी प्रकार ज्ञान, अज्ञान के अंधकार को दूर करता है। अतः हम दीपक जलाकर उसके समक्ष अपना मस्तिष्क झुकाकर यह व्यक्त करते हैं कि ज्ञान ही सभी प्रकार के वैभव का प्रतीक है, ज्ञान ही हमें अच्छे या बुरे कर्मों की ओर ले जाता है, हमारे विचारों और कर्मों के साक्ष्य के रूप में हम प्रत्येक शुभ अवसर पर दीपक प्रज्वलित करते हैं। पारंपरिक रूप से दीपक जलाने का धार्मिक महत्व है। दीपक में तेल या घी हमारी वासनाओं (अत्यधिक सांसारिक इच्छाओं) अथवा नकारात्मक प्रवृत्तियों और बत्ती हमारे अहम् का प्रतीक होती है। धार्मिक ज्ञान के अनुसार, दीपक जलने पर हमारी वासनाएं कमजोर पड़ने लगती हैं और अंततः हमारे अहम् का विनाश हो जाता है। दीपक की ज्योति सदैव ऊपर की और जलती है। ठीक उसी प्रकार हमें ऐसे ज्ञान का अभिग्रहण करना चाहिए जो हमें नित्य उच्च आदर्शों की ओर ले जाये। जिस प्रकार, एक दीपक सौ से अधिक दीपकों को जला सकता है। ठीक उसी प्रकार एक ज्ञानी मनुष्य अधिक से अधिक लोगों में अपना ज्ञान बाँट सकता है। एक दीपक की रोशनी की चमक अन्य दीपकों को बार–बार जलाने पर भी कम नहीं होती है। इसी प्रकार दूसरों को ज्ञान बांटने पर घटता नहीं है अपितु ऐसा करने पर हमारे ज्ञान में स्पष्टता और अभिशंसा आ जाती है यह प्रापक और दाता, दोनों के लिए लाभदायक होता है। अतः हम दीपक जलाकर यह प्रार्थना करते हैं।

दीपज्योतिः परब्रह्मा दीपः सर्वतमो अपह :
दीपेन साध्यते सर्व संध्यादीपो नमोस्तूते।

vFkkr& "मैं, उषाकाल या संध्याकाल जलाए गए दीपक को साष्टांग प्रणाम करता/करती हूँ, जिसकी ज्योति प्रभु के सामान है जो अज्ञानता के अंधकार को दूर करती है और हमारे जीवन में सम्पूर्ण कार्यों को सिद्ध कराती है।

"पूजा कक्ष"

अधिकतर भारतीय घरों में पूजा का एक विशिष्ठ कक्ष होता है। एक दीपक जलाकर प्रतिदिन प्रभु का पूजन किया जाता है। यहाँ अन्य धार्मिक क्रिया कलापों, जैसे कि जप, चिंतन, परायण, प्रार्थनाएं, कीर्तन आदि भी किये जाते हैं। जन्मदिन, जयंती, त्यौहार जैसे अवसरों पर विशेष पूजाएं की जाती हैं। परिवार का हर सदस्य बच्चा, बूढ़ा प्रभु की पूजा और ईस्ट से बातचीत यहीं करता है।

घर में पूजा कक्ष क्यों होता है?

प्रभु ने ही इस सृष्टि की रचना की है। जिस घर में हम रहते हैं, वास्तव में प्रभु ही उस घर का स्वामी होता है। पूजा–कक्ष गृह का प्रधान कक्ष होता है। हम तो प्रभु की संपत्ति के सांसारिक अधिकारी होते हैं। यह भवन हमें अभिमान एवं अधिकारात्मकता के अभ्यास से दूर रखता है।

हमें स्वयं को केवल प्रभु के घर का संरक्षक मानना चाहिए। यदि ऐसा सोचना हमारे लिए कठिन हो तो हम प्रभु को एक सम्मानीय अतिथि मान सकते हैं। जिस प्रकार हम अपने किसी महत्वपूर्ण अतिथि को हर प्रकार का आराम एवं सुविधाएं प्रदान करते हैं, ठीक उसी प्रकार इष्ट को एक मुख्य अतिथि मानते हुए हमें उसके कक्ष को स्वच्छ एवं सजाकर रखना चाहिए।

प्रभु हर स्थान पर हर समय हमारे साथ होते हैं। हमें यह याद दिलाने के लिए कि प्रभु हमारे घरों में निवास करते हैं, हमारे घरों में पूजा–कक्ष होता है। प्रभु की कृपा के अभाव में हमारा कोई भी कार्य सफलतापूर्वक संपन्न नहीं हो सकता। हम पूजा–कक्ष में प्रतिदिन एवं विशेष अवसरों पर उनके साथ संपर्क साधते हैं जिससे कि उनकी कृपा दृष्टि हम पर बनी रहे।

घर का प्रत्येक कमरा किसी विशिष्ट कार्य के लिए प्रयोग में आता है। जैसे कि आराम कक्ष आराम करने के लिए, अतिथि गृह अतिथियों के लिए एवं रसोई घर भोजन बनाने के लिए प्रयुक्त होता है। प्रत्येक कक्ष का फर्नीचर, सजावट एवं उसका उद्देश्य को पूरा कर सके, इसीलिए ध्यान, पूजा एवं प्रार्थना के लिए जिस प्रकार के वातावरण की आवश्यकता होती है, वह हमें पूजा कक्ष ही प्रदान कर सकता है।

पवित्र विचार एवं सकारात्मक ध्वनियाँ पूजा–कक्ष के हर कोने में फैली रहती हैं। निरंतर मनन एवं पूजन हमारे चिंतित मन को शांत करते हैं। जब कभी हम थके या परेशान रहते हैं तो पूजा–कक्ष हमारे भीतर ऊर्जा एवं स्फूर्ति दे, हमें नवजीवन प्रदान करता है।

''नमस्कार''

भारतीय लोग एक दूसरे से मिलकर ''नमस्ते'' कहते हैं। दोनों हथेलियों को जोड़कर, सीने के आगे रखकर शीश झुकाकर ''नमस्ते'' कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह बूढ़ा हो, बच्चा हो या फिर हमउम्र अथवा अजनबी सभी इसी प्रकार मिलते हैं।

शास्त्रों के नियमानुसार अभिनन्दन करने के पाँच औपचारिक तरीके हैं जिसमें से एक है ''नमस्कार''। यह साष्टांग प्रणाम समझा जाता है किन्तु वास्तव में इसका तात्पर्य सम्मान देना होता है जो कि हम एक दूसरे को ''नमस्ते'' कह कर देते हैं।

हम नमस्ते क्यों करते हैं?

नमस्ते साधारण या फिर औपचारिक स्वागत करने का परंपरागत सांस्कृतिक तरीका हो सकता है किन्तु नमस्ते

का बहुत गहरा अर्थ है। संस्कृत में नमः + ते = नमस्ते का अर्थ है–शीश झुकाकर आपका अभिनंदन करता हूँ। नमः का शाब्दिक तात्पर्य है ''न'' ''माँ'' (मेरा नहीं), इसका एक धार्मिक महत्व है। यह हमारे अहम् को समाप्त कर देता है। वास्तविक रूप में लोगों के बीच असली मिलाप उनके मन का मिलाप होता है। हम एक दूसरे का अभिनन्दन ''नमस्ते'' कह कर ही करते हैं। इसका अर्थ है– हे ईश्वर। हमारे मन का मिलाप हो। ''अपनी मित्रता को शालीनतापूर्वक प्यार कर बढ़ाने के लिए हम अपना शीश झुकाकर नमस्ते करते हैं।

इसका धार्मिक अर्थ यह है कि जो जीवन–शक्ति, दिव्यता एवं ईश्वर मुझमें है वही सब में है। इस एक भाव को अपनी हथेलियों के मिलान के साथ पहचान कर, हम अपना मस्तिष्क झुकाकर उस इंसान की दिव्यता को प्रणाम करते हैं जिससे हम मिलते हैं। इसलिए जब हम अपनी आँखें बंद करके किसी पूज्य व्यक्ति या भगवान को नमस्ते करते हैं तो ऐसा लगता है कि मानो हम स्वयं की आत्मा या ईश्वर में झांक रहे हों। ऐसे भाव के साथ हम विभिन्न शब्द, जैसे ''राम–राम'', ''जय श्री कृष्ण'', ''नमो नारायण'', ''जय सिया राम'', ''ॐशांति'' आदि जो की दिव्यता को दर्शाते हैं, कहते हैं।

जब हम ''नमस्ते'' का महत्व समझ जाते हैं तो हमारा स्वागत केवल एक बाहरी भाव या शब्द का नहीं रहता बल्कि दूसरे से गहरा संपर्क, प्यार एवं आदर का वातावरण बना देता है।

''दंडवत प्रणाम''

भारतीय सभ्यता में हमारे माता–पिता, बुजुर्गों तथा अध्यापकों को ईश्वर सामान माना जाता है। अतः हम भारतीय लोग उनके पैर छूकर उन्हें प्रणाम करते हैं। हमारे बड़े अपना हाथ हमारे सिर पर रखकर हमें आशीर्वाद देते हैं। साष्टांग प्रणाम प्रतिदिन तथा किसी कार्य की शुरुआत पर या जन्मदिन, त्यौहार आदि महत्वपूर्ण अवसरों पर किया जाता है। कुछ परिवारों में साष्टांग प्रणाम के साथ अभिवादन भी किया जाता है जिससे हम अपने परिवार एवं अपने सामाजिक स्तर का परिचय देते हैं।

हम साष्टांग प्रणाम क्यों करते हैं?

मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होता है। साष्टांग प्रणाम करते हुए अपने से बड़ों के पैरों को छूना उनकी आयु परिपक्वता, श्रेष्ठता एवं दिव्यता के प्रति आदर का प्रतीक होता है। यह दर्शाता है कि हम उनके भीतर के प्यार, त्याग एवं उनके द्वारा हमारी भलाई के लिए किये जाने वाले सभी कार्यों के प्रति विनम्र रूप से उनकी महानता को स्वीकारते हैं। यह परंपरा परिवारों के बीच एक अटूट रिश्ते का कारण है। साष्टांग प्रणाम करने की परंपरा हमारे परिवारों में प्यार के बंधन को मजबूती प्रदान कराती है।

हमारे यहाँ बुजुर्गों के आदर्शों और आशीर्वाद को बहुत मान्यता दी जाती है। अच्छे विचार हमारे मन में सकारात्मक तरंगें पैदा करते हैं। श्रेष्ठ विचार, दिव्यता, शालीनता और प्रेम से भरे हुए हृदय में अत्यधिक शक्ति होती है।

जब हम शालीनता से अपने बड़ों को साष्टांग प्रणाम करते हैं तो उनके द्वारा दिए गए आशीर्वाद से हम अपने आप को सकारात्मक ऊर्जा से घिरा हुआ महसूस करते हैं।

आदर को प्रदर्शित करने के विभिन्न तरीके हैं :

iR;RFkku – खड़े होकर स्वागत करना। नमस्कारं–श्रद्धा को नमस्ते के रूप में प्रदर्शित करना।
mi lxg.k– बड़ों के पैर छूना, साष्टांग समस्त शरीर (आठों अंगो को) को भूमि पर लिटाकर प्रणाम करना।
iR;foHkn – अभिवादन का उत्तर अभिवादन करते हुए देना।

कौन किसको प्रणाम करे? इन नियमों का उल्लेख शास्त्रों में किया गया है।

वैभव, पारिवारिक प्रतिष्ठा, उम्र, नैतिक बल और धार्मिक ज्ञान के बढ़ते हुए क्रम के अनुसार ही मनुष्य द्वारा आदर दिया या लिया जाता है। यही वजह है कि राजा पृथ्वी का शासक होते हुए भी एक धर्म गुरु के समक्ष झुकता है। महाभारत, रामायण जैसे कई कथाओं में इसका उल्लेख किया गया है। मनुष्यों, परिवारों एवं समाज के मध्य यह प्रथा पारंपरिक प्रेम एवं आदर का वातावरण बनाते जाना चाहिए।

''प्रभु को भोग''

पश्चिमी परंपरा के अनुसार, भोजन प्रभु से धन्यवाद–प्रकाशन प्रार्थना के पश्चात् ही ग्रहण किया जाता है। भारतीय लोग भोजन का कुछ हिस्सा प्रभु को अर्पण कर उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। मंदिरों एवं कुछ घरों में प्रतिदिन भोजन पकाने के पश्चात सबसे पहले भगवन को ही अर्पित किया जाता है। प्रभु को भेंट किया हुआ भोजन बाकी भोजन में मिलाकर उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है। दैनिक पूजन में हम प्रभु को नैवेद्यम (भोजन) भेंट करते हैं।

प्रभु को नैवेद्यम क्यों भेंट देते हैं?

प्रभु सर्वशक्तिमान एवं सर्वज्ञ हैं। मनुष्य उसका एक हिस्सा है एवं प्रभु सम्पूर्णता है। प्रभु की शक्ति एवं ज्ञान के फलस्वरूप ही हम सभी कार्य संपन्न कर पाते हैं। इसीलिए जो कुछ भी हमें अपने जीवन में किये गए कर्मों द्वारा प्राप्त होता है वह सब कुछ प्रभु की ही देन है। हम प्रभु को भोजन अर्पित कर इस सत्य को स्वीकारते हैं। ''आरती'' ''ॐजय जगदीश हरे'' की निम्न पंक्ति ''तेरा तुझको अर्पण'' इसी बात की व्याख्या करती है।

अर्थात ''जो तेरा है, वह मैं तुझे अर्पित करता/करती हूँ'' इस प्रकार ग्रहण किया गया भोजन हमें प्रभु की दिव्यता का आभास कराता है।

यह जानकर हमारा व्यवहार भोजन के प्रति एवं उसे ग्रहण करने के प्रति बदल जाता है। इस प्रकार ग्रहण किया गया भोजन स्वाभाविक रूप से पवित्र एवं श्रेष्ठ होता है। जो भोजन हमें दूसरों के साथ मिलता है, हम उसे ग्रहण करने से पूर्व बांटते हैं। हम भोजन का प्रकार नहीं बताते, न ही इस दिए गए भोजन में दोष निकालते हैं। हम उसे स्वीकार करने से भी मना नहीं करते। हम उसे हर्षित होकर ग्रहण करते हैं। इस प्रकार की भावना जब हमारे भीतर बलवती होती है तो इसका प्रभाव हमारे सम्पूर्ण कार्यों में जीवन पर्यन्त दिखाई देता है। तब हम खुशी से अपने जीवन में हर प्रकार की वस्तु को ''प्रसाद'' के रूप में अपना लेते हैं। शुद्धि के तौर पर हम भोजन ग्रहण करने से पूर्व अपनी थाली के आस–पास पानी छिड़कते हैं। हम अपने भोजन में से पंच निवाले अपनी थाली के कोने में रखते हैं। यह करने से हम स्वयं पर प्रभु के ऋणों को स्वीकार करते हैं। यह पांचों निवाले निम्न ऋणों के प्रतीक हैं।

1. **देव ऋण** : यह अर्पित होता है उस रक्षा एवं कृपा के लिए जो देवता हमें प्रदान करते हैं।
2. **पितृ ऋण** : दूसरा निवाला हमारे पूर्वजों को अर्पित होता है, उनकी परम्पराओं एवं पारिवारिक सभ्यता के लिए।
3. **ऋषि ऋण** : तीसरा निवाला हमारे ऋषि मुनियों को अर्पित होता है, जिन्होंने धार्मिक सभ्यता एवं संस्कृति को उच्चाकाश तक पहुँचाया।
4. **मनुष्य ऋण** : चौथा निवाला समाज के उन मनुष्यों को अर्पित होता है जो कि हर कदम पर हमारे साथ होते हैं।
5. **बहहत ऋण** : यह अर्पित होता है उन प्राणियों को जो स्वार्थहीन होकर हमारी सहायता करते हैं।

इस प्रकार ईश्वर, उन पंच तत्वों के रूप में माना है जो कि जीवन चलाने के लिए उत्तरदायी हैं एवं यह तत्व हमें भोजन से प्राप्त होते हैं। प्रभु को भोजन अर्पित करते समय हम यह कहते हैंः–

प्रणय स्वाहाः, अपने स्वाहाः, व्यानाय स्वाहाः।
उड़ाने स्वाहाः, सामने स्वाहाः, ब्रह्मणे स्वाहाः।

यह याद रखने के लिए हमें गीता के निम्नलिखित श्लोकों का उच्चारण करना चाहिए :–

ब्रह्मर्पणं ब्रह्महविः ब्रह्मग्नो ब्राह्मनाहुतम।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना।।

अर्थात– ''यज्ञ में जो हम अर्पण करते हैं वह भी ब्रह्म है और हवन किये जाए योग्य द्रव्य भी ब्रह्म है तथा ब्रह्मरूप अग्नि में स्थित रहने वाले योगी द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य फल भी ब्रह्म है।

अहम् वैश्वानरो भूत्वा प्राणीनाम देहमाश्रितः।
प्राणापान समायुक्तः पचामयन्नम चतुर्विधं।।

अर्थात– ''मैं ही सब प्राणियों के शरीर में रहने वाला प्राण और अपान से संयुक्त वैश्वानर अग्निरूप होकर चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ।''

''उपवास''

ज्यादातर धार्मिक भारतीय लोग नियमपूर्वक एवं त्योहारों जैसे विशेष अवसरों पर उपवास रखते हैं। उस दिन वे कुछ नहीं खाते हैं या एक ही समय भोजन ग्रहण करते हैं या आहार के रूप में फल लेते हैं अथवा विशेष प्रकार का भोजन ग्रहण करते हैं। कुछ लोग कठिन उपवास रख पूरे दिन पानी का सेवन भी नहीं करते अर्थात ''निर्जल उपवास'' रखते हैं। उपवास रखने के कई कारण होते हैं– ईश्वर को प्रसन्न करना, स्वयं को अनुशासित करना या फिर विद्रोह करना भी। गांधीजी ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उपवास रखा था।

हम उपवास क्यों रखते हैं?

संस्कृत में व्रत को उपवास कहते हैं। उप से तात्पर्य है ''समीप एवं वास से तात्पर्य है ''रहना'' अतः उपवास का अर्थ है ईश्वर के समीप रहना अर्थात मानसिक रूप से स्वयं को ईश्वर के निकट पाना।

हमारा अधिकांश समय एवं ऊर्जा विभिन्न प्रकार के भोजन सामग्रियों को पकाने, खाने एवं पचाने में खर्च हो जाती है। कुछ प्रकार के भोजन हमारे मस्तिष्क को मंद एवं उत्तेजित कर देते हैं। इसलिए मनुष्य किसी–किसी दिन उपवास रख साधारण भोजन खाता है और समय बचाने के साथ–साथ अपनी ऊर्जा भी संरक्षित करता है। इस प्रकार उपवास से मनुष्य का मन सतर्क एवं पवित्र रहता है। अतः उपवास रखकर हमारा मन हर समय नाना प्रकार के व्यंजनों की न सोच श्रेष्ठ विचारों का स्वागत करता है। उपवास स्वयं को अनुशासित करने का तरीका है। इसीलिए इसे खुशी–खुशी रखना चाहिए।

इस तरह उपवास के दौरान ग्रहण किये जाने वाले भोजन में बदलाव और उसके फलस्वरूप पेट को मिला आराम हमारे पाचन तंत्र के लिए लाभदायक होता है। उपवास हमें स्वयं पर संयम रखना सिखाता है।

उपवास रखकर हमें कभी भी कमजोर या चिड़चिड़ा महसूस नहीं करना चाहिए। ऐसी परेशानियां हमें तब होती हैं जब हमारे उपवास रखने का कोई पवित्र लक्ष्य नहीं होता। कुछ लोग उपवास केवल वजन घटाने के लिए रखते हैं। अन्य लोग उपवास रखकर प्रभु को प्रसन्न करके अपनी इच्छाओं की पूर्ति चाहते हैं और कुछ अपने आत्म संयम को मजबूत रखने एवं तपस्या के लिए व्रत रखते हैं। भगवद गीता हमें उपयुक्त आहार – न बहुत ज्यादा और न बहुत कम – खाने की प्रेरणा देती है। गीता के अनुसार जब हमने उपवास न रखा हो तब भी हमें साधारण पवित्र एवं सात्विक भोजन ही ग्रहण करना चाहिए।

''परिक्रमा''

जब हम मंदिर जाते हैं, तो पूजा समाप्त कर उपासना–कक्ष की परिक्रमा करते हैं, यह ''प्रदक्षिणा'' कहलाती है।

हम प्रदक्षिणा क्यों करते हैं ?

बिना केंद्र बिंदु के एक गोले का निर्माण करना असंभव होता है। हमारे जीवन के अस्तित्व एवं स्रोत का केंद्र बिंदु ईश्वर है। ईश्वर को अपने जीवन का केंद्र बिंदु मानते हुए, हम अपने नित्य कार्यों का संपादन करते हैं। प्रदक्षिणा का यही महत्व है।

एक वृत का प्रत्येक बिंदु केंद्र बिंदु से समान दूरी पर होता है। इससे यह तात्पर्य है कि हम जहाँ कहीं भी या जो कोई भी हों, सदैव ईश्वर के समीप रहते हैं। ईश्वर बिना पक्षपात किये, सभी पर सामान रूप से अपनी कृपा रखता है।

प्रदक्षिणा दक्षयवृत (बायीं से दायीं ओर) ही क्यों की जाती है?

प्रदक्षिणा करते समय ईश्वर सदैव हमारे दायीं ओर रहता है। भारत में दाहिना भाग शुभ माना जाता है। इसलिए जब हम ''उपासना–कक्ष की परिक्रमा करते हैं तो हम स्वयं को याद दिलाते हैं कि हमारे दाहिने हाथ के रूप

में ईश्वर हमारे साथ है। अतः हम अपनी नकारात्मक प्रवृत्तियों को पार कर अपने द्वारा किये गए दुष्कर्मों को भविष्य में न दोहराने का संकल्प करते हैं।

भारतीय शास्त्रों में लिखा है– मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव अर्थात हमें अपने माता–पिता एवं अध्यापकों को ईश्वर के समान मानना चाहिए। यह भावना अपने मन में रखते हुए हमें अपने माता–पिता एवं दिव्य लोगों की परिक्रमा करनी चाहिए। गणेश जी द्वारा अपने माता–पिता की परिक्रमा करने की कहानी सर्व. ज्ञात है।

पारंपरिक पूजा समाप्त कर, हम रीति के अनुसार स्वयं की परिक्रमा करते हैं। इस तरह हम अपनी भीतर की दिव्यता को पहचानते हैं और उसे याद रखते हैं। जब हम परिक्रमा करते हैं तो यह प्रार्थना करते हैं.

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च
तानी तानी विनश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे ।

अर्थात–

जो भी पाप–कर्म किसी भी व्यक्ति द्वारा किये गए हैं,
उनका इस परिक्रमा के हर कदम के साथ विनाश हो।

संकलनकर्ता
सुधीर भण्डारी
उप महानिदेशक (एन.ए.)

गीता सार

जो हुआ वह अच्छा हुआ,
जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है
जो होगा, वह भी अच्छा होगा
तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो?
तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया?
तुमने क्या पैदा किया, जो नष्ट हो गया?
तुमने जो लिया, यहीं से लिया
जो दिया, यहीं पर दिया
जो आज तुम्हारा है,
कल किसी और का था,
कल किसी और का होगा।

परिवर्तन ही संसार का नियम है

गीता श्लोक

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत !
अभ्युथानमधर्मस्य तदात्मांन सृजाम्यहम् !!
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् !
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामी युगे युगे !!

रेखा
एम.टी.एस. (एम.एम.)

गैरहाज़िर कंधे

विश्वास साहब अपने आपको भाग्यशाली मानते थे। कारण यह था कि उनके दोनों पुत्र आई.आई.टी. करने के बाद लगभग एक करोड़ रुपये का वेतन अमेरिका में प्राप्त कर रहे थे। विश्वास साहब जब सेवानिवृत्त हुए तो उनकी इच्छा हुई कि उनका एक पुत्र भारत लौट आए और उनके साथ ही रहे परन्तु अमेरिका जाने के बाद कोई पुत्र भारत आने को तैयार नहीं हुआ, उल्टे उन्होंने विश्वास साहब को अमेरिका आकर बसने की सलाह दी। विश्वास साहब अपनी पत्नी भावना के साथ अमेरिका गये, परन्तु उनका मन वहाँ पर बिल्कुल नहीं लगा और वे भारत लौट आए।

दुर्भाग्य से विश्वास साहब की पत्नी को लकवा हो गया और पत्नी पूर्णतः पति की सेवा पर निर्भर हो गई। प्रातः नित्यकर्म से लेकर खिलाने–पिलाने, दवाई देने आदि का सम्पूर्ण कार्य विश्वास साहब के भरोसे पर था। पत्नी की जुबान भी लकवे के कारण चली गई थी। विश्वास साहब पूर्ण निष्ठा और स्नेह से पति धर्म का निर्वहन कर रहे थे।

एक रात्रि विश्वास साहब ने दवाई वगैरह देकर भावना को सुलाया और स्वयं भी पास लगे हुए पलंग पर सोने चले गए। रात्रि के लगभग दो बजे हार्ट अटैक से विश्वास साहब की मौत हो गई। पत्नी प्रातः 6 बजे जब जागी तो इन्तजार करने लगी कि पति आकर नित्यकर्म से निवृत्त होने में उसकी मदद करेंगे। इन्तजार करते करते पत्नी को किसी अनिष्ट की आशंका हुई। चूँकि पत्नी स्वयं चलने में असमर्थ थी, उसने अपने आपको पलंग से नीचे गिराया और फिर घसीटते हुए अपने पति के पलंग के पास पहुँची। उसने पति को हिलाया–डुलाया पर कोई हलचल नहीं हुई। पत्नी समझ गई कि विश्वास साहब नहीं रहे। पत्नी की जुबान लकवे के कारण चली गई थी, अतः किसी को आवाज देकर बुलाना भी पत्नी के वश में नहीं था। घर पर और कोई सदस्य भी नहीं था। फोन बाहर ड्राइंग रूम में लगा हुआ था। पत्नी ने पड़ोसी को सूचना देने के लिए घसीटते हुए फोन की तरफ बढ़ना शुरू किया। लगभग चार घण्टे की मशक्कत के बाद वह फोन तक पहुँची और उसने फोन के तार को खींचकर उसे नीचे गिराया। पड़ोसी के नंबर जैसे तैसे लगाये। पड़ोसी भला इंसान था, फोन पर कोई बोल नहीं रहा था, पर फोन आया था, अतः वह समझ गया कि मामला गंभीर है। उसने आस–पड़ोस के लोगों को सूचना देकर इकट्ठा किया, दरवाजा तोड़कर सभी लोग घर में घुसे। उन्होंने देखा–विश्वास साहब पलंग पर मृत पड़े थे तथा पत्नी भावना टेलीफोन के पास मृत पड़ी थी। पहले 'विश्वास और फिर भावना की मौत' हुई। जनाजा दोनों का साथ–साथ निकला। 'पूरा मोहल्ला कंधा दे रहा था परन्तु दो कंधे मौजूद नहीं थे जिसकी माँ–बाप को उम्मीद थी। शायद वे कंधे करोड़ो रुपये की कमाई के भार के साथ अति महत्वकांक्षा से पहले ही दबे हुए थे।

लोग बाग लगाते हैं फल के लिए
औलाद पालते हैं बुढापे के लिए
लेकिन .....
कुछ ही औलाद अपना फर्ज निभा पाते हैं ।।

अति सुन्दर कहा है एक कवि ने....
''मत शिक्षा दो इन बच्चों को चांद–सितारे छूने की।
चांद–सतारे छूने वाले छूमंतर हो जाएंगे।
अगर दे सको, शिक्षा दो तुम इन्हें चरण छू लेने की,
जो मिट्टी से जुड़े रहेंगे, रिश्ते वही निभाएंगे....

हर्ष शर्मा
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस.)

एक ही है

जिस प्रकार समस्त संसार को दिन में ऊष्मा व प्रकाश देने वाला सूर्य देवता एक है, रात को शीतलता देने वाला चंद्र एक है, भोजन देने वाली धरती भी एक है, अपार जल का देवता समुद्र भी एक है, आसमान भी एक है, हमेशा रहने वाली प्रकृति भी एक है, ठीक इसी प्रकार इन सब नक्षत्रों को चलाने वाला परम पिता परमात्मा भी एक ही है। अनेक गुणों के कारण भिन्न–भिन्न देवी देवता तो हमेशा हमारे ऊपर दया दृष्टि बनाये रखते हैं और जिन मनुष्यों में इसी प्रकार के सात्विक गुणों का समावेश हो जाता है वही मनुष्य हम सब के लिए भगवान का रूप ले लेते हैं और हम उन्हें ही पूजने लगते हैं। परन्तु किसी ने सत्य ही कहा है कि इस संसार में भगवान तो बहुत हो गए हैं जैसे सोलंह कला सम्पूर्ण योगिराज भगवान श्री कृष्ण, जैन पंत के भगवान श्री महावीर, विश्व के सर्वोतम धनुधारी आदर्शवादी भगवान श्री राम आदि, लेकिन वेदों के अनुसार वास्तव में समस्त विश्व को चलाने वाला, सृष्टि बनाकर पालन व संहार करने वाला (अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश) वह परम शक्ति, वह परम पिता परमात्मा तो केवल एक ही है। वेदों में भी इसकी चर्चा कि है ''एको देवा सर्भोतेशु गूड़ा, सर्वव्यापी, सरवानतरतमाना, कर्माअधक्ष्यआ, साक्षीचेता, केवेलों निर्गुणश्य'' अर्थात वह एक ही ऐसा देवता (परमात्मा) है जो सभी गुणों से युक्त है, वह ही सभी स्थानों में हर समय उपस्थित रहता है और सभी की आत्माओं में विराजमान है, सभी उत्तम कर्मों को कराने वाला भी वह एक ही है। हर समय वह चेतन्य अवस्था में रहता है जिसका हम सभी प्रतिदिन कई कार्यों में अनुभव करते रहते हैं वही परमात्मा निर्गुणी भी है, उसका कोई आकार नहीं है, उसकी कोई सूरत भी नहीं है, उसका कोई रंग भी नहीं है, यहाँ तक की वह हम सभी को कभी दिखाई भी नहीं देता है। हमारे हर शुभ व अशुभ कर्मों को सदा देखता रहता है। वह तो अजर, अमर, अभय, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वेश्वर, सर्वांतर्यामी, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, इसीलिए वह ही केवल पूज्यनीय है।

परन्तु दोस्तों सच्चाई का रास्ता, सादा जीवन उच्च विचार, प्रभु प्राप्ति का भी केवल मात्र एक ही रास्ता है दो नहीं है, और वह रास्ता है वैदिक योग के आठों अंगों का पालन करके योग विद्या द्वारा प्रभु के दर्शन पाना या इस आवागमन के चक्कर से मुक्त होना।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी के आदेश अनुसार, सम्पूर्ण भारत को स्वच्छ अभियान के अन्तर्गत लाने का जो संकल्प है वह भी उस परम पिता परमात्मा को पाने का सबसे पहला और अति आवश्यक एक ही सराहनीय कदम है। स्वच्छता ही देश की उन्नति की सबसे पहली मजबूत कड़ी है। इसे हम सब ने समस्त देश के सभी राज्यों के मुख्य–मुख्य नगरों में, गांव–गांव में, घरों में, गलियों में, बाजारों में, कार्यालयों में, स्कूल व कालेजों में तथा सभी अस्पतालों में इस स्वच्छ अभियान को सफल बनाना है। यदि आप चाहते हैं कि आप केवल एक ही ऐसा काम करें जिससे आपको खुशी जरूर मिले, तो आपको केवल मात्र सकारात्मक संकल्प के साथ मन से खुश होकर ही किसी भी काम को करना होगा, वह काम है दूसरों को खुशी देना तो आपको स्वतः ही खुशी मिल

जायेगी। समय के साथ–साथ एहसास व नजरिया भी हमें बदलना होगा तभी हम सभी सुखी रह सकते हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है ''दूसरों की राह में बिछाता तू सूल रे, कैसे मिलेंगे तुझे खुशियों के फूल रे''। वह एक ही ऐसा सुपर पावर है जिसके सभी कार्य नियमानुसार, अनुशासित तथा पूर्णतया व्यवस्थित होते हैं। दिन के बाद रात और रात के बाद दिन भी अपने आप बदलते रहते हैं। वह अपने कार्यों को स्वयं ही उत्तम समयानुसार करता रहता है इसीलिए उसे पाने का भी एक ही सही मार्ग हो सकता है दो या तीन या चार नहीं। सही मार्ग उत्तम बुद्धि द्वारा ही दिखाई दे सकता है इसीलिए उत्तम बुद्धि प्राप्ति के लिए वेद के सबसे मुख्य गुरु गायत्री मंत्र ॐ Hk% Hkqo% Lo%A rRlforqoj.;a Hkxks noL; /khefgA f/k;ks ;ks u% izpkn;kr का हर पल हर क्षण जाप करना चाहिए। आशा है हम सब अपने जीवन में इन विचारों को शीघ्र अपनाएंगे।

राकेश बेदी
सलाहकार (आई.टी)

ये दुनिया अजीब मेला है

ये दुनिया भी अजीब मेला है,
यहां हर दिन एक नया खेला है।
कहने को तो भीड़ है लेकिन,
यहां हर आदमी अकेला है।

आदमी–आदमी से भाग रहा है,
हर कोई अपनी ही हांक रहा है।
कोई अधिक खाने से बेचैन है,
तो कोई भूख के मारे जाग रहा है।

आदमी–आदमी से अलग दिखता है,
दोस्त भी दुश्मन की तरह मिलता है।
साग–सब्जी की तो बात ही छोड़िए,
यहां तो आदमी भी बिकता है।

कोई दुखी है हालात से,
कोई दुखी है जज्बात से।
किसी का कोई साथी नहीं,
कोई दुखी है किसी के साथ से।

कोई धन के लिए परेशान है,
कोई धन पाकर परेशान है।
इंसान भी क्या चीज बना है,
खुद बनाने वाला भी हैरान है।

जहां देखो शोर ही शोर है,
खून–ए–हिंसा का दौर है।
शांति से कोई जिएं कैसे,
हर तरफ पाप का घोर जोर है।

संकलनकर्ता
आरती
एम.टी.एस (टी.डब्ल्यू.ए)

जीवन की वास्तविकता

सुनकर मेरी एक पुकार
ईश्वर भी मुस्कराया है
ऐसा भी क्या माँग लिया
जो देने से शर्माया है।
जी रहा हूँ इस जीवन को
बस अपने अरमानों से.....

देशकाल दुख झेल रहयो मैं
कब तक आस लगाऊँ
नहीं सुनी पुकार मेरी
अब ना आस लगाऊँ
जी रहा हूँ इस जीवन को
बस अपने अरमानों से....

चैन नहीं आता है मुझको
इस दुनिया के दीवानों में
बहुत दिए दुख जीवन ने
समझ नहीं अब आता मुझको
जी रहा हूँ इस जीवन को
बस अपने अरमानों से.....

ना किसी से वफा रही अब
ना किसी से गिला रहा
ये जीवन ही मजबूरी था
जो तुम सब से मेरी वफा रही
जी रहा हूँ इस जीवन को
बस अपने अरमानों से

माँ

छू रहा हूँ जिन चरणों को
उनमें ईश्वर देख रहा हूँ

बिछड़ रहा था जब मैं माँ से
छलक पड़े आँसू उस माँ के

माँ की ममता रहे अधूरी
जान जाए पर होय ना पूरी

धड़क रहा था माँ का आँचल
अपने बेटे से मिलने की खातिर

माँ के चरणों के नीचे से
जाता है जन्नत का रास्ता

माँ की निर्मल रहती जहाँ छाया
वहाँ बहती है निर्मल माया

पापा ने डांटा है जब भी मुझको
मां का कोमल साथ रहा इस तन को

शरणागत की सेवा करना
माँ ने सिखाया जब इस तन को

भूल न पाया मैं उस पल को
जिस पल माँ ने गले लगाया मुझको।।

राजेश कुमार मीना
आशुलिपिक (प्रशासन)

अष्ट सिद्धि नव निधि

भगवान राम के प्रिय भक्तों में हनुमान जी का नाम सबसे पहले आता है। हनुमान जी भगवान शिव के 11 वें रूद्र हैं, जिनका जन्म भगवान राम की सहायता के लिए हुआ था व इन्हें अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता के रूप में जाना गया है। हनुमान चालीसा की चौपाई:

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता– असबर दीन जानकी माता

हनुमान जी को यह वरदान माता जानकी ने दिया था जिससे बजरंग बली अपने भक्तों को आठ प्रकार की सिद्धियां व नौ प्रकार की निधियां प्रदान कर सकते हैं। ये चमत्कारिक सिद्धियां असंभव लगने वाले कार्य को भी आसानी से कर सकती हैं। भागवत पुराण में इनका वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है:–

आठ सिद्धियां:–

अणिमा :– इस सिद्धि के बल पर हनुमान जी कभी भी अति सूक्ष्म रूप धारण कर सकते हैं।

महिमा :– इस सिद्धि के बल पर हनुमान जी ने कई बार विशाल रूप धारण किया ।

गरिमा :– इसकी मद्द से हनुमान जी अपना भार किसी पर्वत के बराबर कर सकते हैं।

लधिमा :– इस सिद्धि से स्वयं का भार हल्का कर सकते हैं व पल में कहीं भी आ जा सकते हैं।

प्राप्ति :– इसके द्वारा किसी भी वस्तु को तुरंत प्राप्त कर सकते हैं, पशु पक्षियों की भाषा समझ लेते हैं एवम् आने वाले समय को देख सकते हैं।

प्राकाम्य:– इसके माध्यम से हनुमान जी पृथ्वी की गहराई में पाताल तक जा सकते हैं, आकाश में उड़ सकते हैं व मनचाहे समय तक पानी में जीवित रह सकते हैं।

ईशित्व :– इस सिद्धि के माध्यम से हनुमान जी को दैवीय शक्तियां प्राप्त हुई।

वशित्व :– इससे हनुमान जी जितेन्द्रिय व मन पर नियंत्रण रखते हैं।

नौ निधियां :–

पदम निधि :– इस निधि से संपन्न मनुष्य सात्विक होता है तथा स्वर्ण चांदी आदि का संग्रह करके दान करता है।

महापद्य निधि :– इससे लक्षित व्यक्ति अपने संग्रहित धन का दान धार्मिकजनों में करता है।

नीलनिधि :– इससे सुशोभित मनुष्य सात्विक तेज से युक्त होता है।

मुकुंद निधि :– मुकुंद निधि से लक्षित व्यक्ति रजोगुण संपन्न होता है तथा वह राज्य संग्रह में लगा रहता है।

मकर निधि :– मकर निधि से संपन्न व्यक्ति अस्त्रों का संग्रह करने वाला होता है।

कच्छप निधि :– इससे लक्षित व्यक्ति तामस गुणवाला होता है।

शंख निधि :– शंख निधि एक पीढ़ी के लिए होती है।

खर्व निधि :– खर्व निधि वाले व्यक्ति के स्वभाव में मिश्रित फल दिखाई देते हैं।

नन्द निधि :– इससे युक्त व्यक्ति राजस व तामस गुणों वाला होता है।

संकलनकर्ता
शिव चरण
सहायक अनुभाग अधिकारी (प्रशासन)

बस एक कदम और

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा
बस एक नज़र और इस बार इशारा होगा ।

अम्बर के नीचे उस बादली के पीछे कोई तो किरण होगी
इस अंधकार से लड़ने को कोई तो किरण होगी।

बस एक पहर और इस बार उजाला होगा
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।

जो लक्ष्य को भेदे वो कहीं तो तीर होगा
इस तपती भूमि में कहीं तो नीर होगा।

बस एक कदम और अब लक्ष्य हमारा होगा
बस एक कदम और इस बार किनारा होगा।

जो मंजिल तक पहुंचे वो कोई तो राह होगी
अपने मन को टटोले कोई तो चाह होगी।
जो मंजिल तक पहुचे वो कदम हमारा होगा

बस एक कदम और इस बार किनारा होगा
बस एक नज़र और इस बार इशारा होगा।

नीतू सिंह
कार्यलय सहायक (टी.एंड.ए./आर)
(अनुबंधित)

जश्ने उम्मीद

कल का सब्र आज कुछ याद रहा,
समय के बशर में सब कुछ आबाद रहा।

बरसों दूर दूर तक खोयी नज़र में,
भूला हुआ इक इंतज़ार फरियाद रहा।

माहिर सुबहा की जुबाँ समझने के लिए,
शाम तक दिन का बयाँ तमाम रहा।

फिर किसी बात पर हँसने को मन हुआ,
फ़नरा–ए–शबनम चेहरे की मुस्कान रहा।

अपनों की भीड में बिखरने का हश्र जानकर,
बुलंद ईरादों का संगीन तराश रहा।

अजनबी को पहचानकर भी अजनबी रहे,
गुमशुदा दिल रिश्तों की हयात रहा।

मुलाकात का ही जिक्र कोई गर हो तो,
पैमाना–ए–इश्क उम्र का पडाव रहा।

मिट ही गया हर वजूद खिले गुलशन का,
तारीफे–काबिल जश्ने उम्मीद का काम रहा।

राजेंद्र पी. सोनवणे
(पेंशन अनुभाग)
आर.टी.ई.सी, मुबंई

पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव

पश्चिमी चकाचौंध के कारण हमें लगता है कि पश्चिम की हर चीज, हर बात अच्छी एवं अनुकरणीय है। एक कहावत है कि ''दूर के ढ़ोल सुहावने लगते हैं'' मतलब यह कि जो चीज हमारे पास नहीं होती या हमारी पहुंच से दूर होती है, वह हमें अच्छी लगती है। यहीं बात पाश्चात्य संस्कृति पर भी लागू होती है। हम बिना यह सोचे कि वह चीज हमारे देश के लिए या हमारे लिए उपयोगी है या नहीं, उसे अपनाने के लिए हमेशा लालायित रहते है। चाहे वह उनका बोलने–चालने का ढंग हो, कपड़े पहनने का तरीका हो या खान–पान का मामला हो, हम उनकी हर चीज का अनुसरण करने को तैयार रहते हैं। वास्तव में हमें west का best लेना चाहिए न की west का waste!

पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण

- पश्चिमी सभ्यता का सूत्र है ''ऋण लो और मौज करो'' हर चीज कर्ज लेकर खरीदो। घर, कारें, टेलीविजन, फ्रिज, स्मार्ट फोन हर चीज ! हम भी उनके इस सूत्र का बड़े पैमाने पर उपयोग कर रहे हैं। फिर चाहे किस्तें पटाते–पटाते हमें हमारी नानी ही क्यों न याद आए। हमारे रात और दिन तनाव में ही क्यों न गुजरें !

- संयुक्त परिवार प्रथा भारतीय समाज की नींव थी। पश्चिमी सभ्यता के परिणामस्वरूप एकल परिवारों का चलन बढ़ा है। संयुक्त परिवार नहीं होने से बच्चे अपने–आप को तन्हा महसूस कर, बुरी आदतों का शिकार हो रहे है। बच्चे अपने नजदीकी रिश्तेदारों तक को नहीं पहचान रहे है। बच्चे अपने माता–पिता को भी साथ में रखना पसंद नहीं कर रहे हैं। इस वजह से वृद्धाश्रमों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है।

- हम लोग पाश्चात्य पहनावा पहनने को अपनी शान समझते हैं। इसी वजह से हमारे यहां भी धड़ल्ले से अंगप्रदर्शन किया जाता है। हमने उनकी ''टाई'' को अपना लिया है। स्कूलों में भी बिना सोचे–समझे बच्चों को टाई पहनाई जाती है। जबकि हममें से ज्यादातार लोगों को ये नहीं पाता कि टाई क्यों पहनी जाती है। वस्तुतः पश्चिमी देशों में सर्दी अधिक होने के कारण वहां पर टाई पहनने का प्रचलन है। यदि टाई गले तक सटाकर बंद की हो तो ठंडी हवा गले तक नहीं पहुंच पाती। संपेक्ष में टाई पहनने का उदेश्य ठंड से बचाव मात्र है। लेकिन टाई हमारे यहां स्टेटस सिम्बॉल बन गई है। ऐसे पहनावे का क्या लाभ जिसमें हम स्वयं को सहज न महसूस कर रहे हो।

- वहां के सर्द वातावरण के कारण वहां की इमारतों में कांच का उपयोग ज्यादा किया जाता है। कांच जल्दी गर्म हो जाता है और घर को गर्म रखने में मदद करता है। लेकिन हमारे देश का वातावरण गर्म होने के बावजूद, सिर्फ उनका अनुसरण करने के चक्कर में हम भी हमारे यहां की इमारतों में धड़ल्ले से कांच का उपयोग कर रहे है। चाहे फिर घर को ठंडा करने के लिए एयर कंडिशनर का उपयोग ही क्यों न करना पड़े।

- जंक फूड सेहत के लिए नुकसानदायक है। यह अच्छे से पता होने के बावजूद, हम लोग जंक फूड का सेवन कर रहे है।

पश्चिमी संस्कृति का सकारात्मक परिणाम

- हमारे समाज की सामाजिक कुप्रथायें जैसे कि कन्या भ्रणू हत्या, बालविवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा एवं दहेज इन कुप्रथाओं पर पाश्चात्य संस्कृति के कारण ही थोड़ा–बहुत अंकुश लग सका है।
- पश्चिमी सभ्यता से हम प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया में कदम रख पांए है। अब हम भारतीय भी बिना संकोच आगे बढ़ रहे हैं।
- महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना बढ़ी है। महिलाएं घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर खुली हवा में सांस ले पा रहीं है।

हम पाश्चात्य संस्कृति की आलोचना उनके स्वछंद एवं खुले व्यवहार के कारण करते है लेकिन उनके विशेष गुणों को (जैसे कि देशप्रेम, ईमानदारी, कठोर परिश्रम, कर्मठता) भूल जाते है जिसकी वजह से वे आज विश्व के विकसित देश बने हुए हैं। सिर्फ उनके खुले व्यवहार के कारण उनका विरोध करना एवं उनकी अच्छाईयों की अनदेखी करना तर्कसंगत नहीं है। पाश्चात्य देशों में खुलापन अवश्य है लेकिन अपनी निजता की रक्षा करना वे भली–भांति जानते है। सोशल मीड़िया पर वे कभी भी अपनी निजी जानकारी शेयर नहीं करते जिससे बाद में पछताना पड़े।

पश्चिमी संस्कृति से हम ये सीख सकते है

- पाश्चात्य देशों में एक–दूसरे के प्रति विश्वास का वातावरण है। अनायस कोई किसी पर शक नहीं करता। हम सहसा अजनबी पर विश्वास ही नहीं करते। हमें भी एक–दूसरे पर विश्वास करना सीखना होगा।
- हमें भी उनकी तरह ट्रैफिक नियमों का कड़ाई से पालन करना होगा ताकि अपघातों की संख्या में कमी आंए।
- उनकी तरह हमें भी अपनी मुद्रा की इज्जत करते हुए, नोटों पर कुछ भी लिखने से अपने–आप को रोकना होगा।
- उनकी तरह स्वच्छता का ख्याल रखते हुए सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने से अपने–आप को रोकना होगा।
- उनकी ही तरह बिजली और पानी की बचत करना सीखना होगा।

आज तक का इतिहास देखते हुए यहीं लगता है कि हमने west का best न लेकर west का waste ही लिया है। पश्चिमी सभ्यता ने हम पर किसी भी चीज को अपनाने को लेकर दबाव नहीं डाला है। यह हमारे ऊपर निर्भर है कि हम उनसे क्या लेते है best या waste ।।।

सुमित रस्तोगी
कार्यलय सहायक (स्टोर)
(अनुबंधित)

मेहनत की कीमत

एक समय की बात है एक गरीब मजदूर था। वह हर रोज कड़ी मेहनत करके पास में ही स्थित पहाड़ी से पत्थर तोड़ता और बाजार में जाकर उसे बेच देता जिससे रोज का घर खर्च मुश्किल से चलता था।

एक दिन वह पत्थर बेचने कारीगर की दुकान पर गया तो उसने देखा कि कारीगर बहुत सुन्दर पत्थर व्यापारी को हजारों रुपये में बेच रहा था। उसने कारीगर से पूछा इतने कीमती पत्थर कहाँ मिलते हैं। कारीगर ने कहा यह वही पत्थर है जो तुमने मुझे बेचा था। मैंने तुम्हारे पत्थर को छोटे–छोटे टुकड़े करके इनको अपनी कारीगरी से सुन्दर बनाया है।

कारीगार की बात सुनकर वह बड़ा दुखी हुआ। उसने कहा दुनिया में मेहनत की कोई कीमत ही नहीं। मैं रोज बारह घंटे कड़ी धूप में मेहनत करके पत्थर तोड़कर लाता हूँ। लेकिन मुझे 100 रुपये मुश्किल से मिलते हैं और तुम छः घंटे आराम से बैठकर काम करते हो फिर भी तुम्हारी आमदनी मुझसे 100 गुना अधिक। कारीगर ने कहा, किसी वस्तु का मूल्य इस बात से निर्धारित नहीं होता कि वह कितनी मेहनत करके बनाई गई, उसका मूल्य इस बात से निर्धारित होता है कि उसकी उपयोगिता क्या है या कितनी उपयोगी है।

दुनिया में इन्सान से हजारों गुना शक्तिशाली प्राणी मौजूद हैं लेकिन फिर भी मनुष्य को सबसे शक्तिशाली प्राणी कहा जाता है क्योंकि इन्सान अपने बौद्धिक क्षमताओं, विचारों से कुछ भी कर सकता है।

मेहनत के बिना कुछ नहीं किया जा सकता लेकिन जब तक मेहनत में बुद्धि एवं रचनात्मकता का उपयोग नहीं किया जाता तब तक मेहनत की कोई कीमत नहीं। आप चीजों को रचनात्मकता के द्वारा जितनी उपयोगी बनाते हैं, उसका मूल्य बढ़ता जाता है।

इन्सान के पास सबसे शक्तिशाली बुद्धि होती है जिसके द्वारा वह कुछ भी कर सकता है। हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम कैसे रचनात्मकता के द्वारा समस्याओं को हल करते हैं।

मेहनत का कोई नाम नहीं होता लेकिन जब मेहनत के साथ रचनात्मकता का उपयोग किया जाता है तो हर कार्य आसान हो जाता है।

चितरंजन
एम.टी.एस. (एन.आर.)

बड़े बाबू

बड़े बाबू आज रिटायर हो गए,
सदा अंकों से घिरे रहने वाले बड़े बाबू,
तमाम उम्र गिनती में निकल गयी,
आज भी कुछ गिन रहे हैं .....

गिन रहे हैं जवान बेटी के बढ़ते साल,
एक न्यूनतम सुविधाओं पर जीती आई
पत्नी के चेहरे की बढ़ती झुर्रियां,
उसकी मौन शिकायतें,
बेरोजगार बेटे की नाकाम डिग्रियां,
और आने वाली पेंशन के चंद नोट .....

यूँ बड़े बाबू सदैव गिनते रहे हैं
रिश्वत दिए बिना ही काम हो जाने की
खुशियों से मुस्कुराते चेहरे,
भरे कंठ और कभी–कभी नम आँखें,
सहकर्मियों के ताने और घूरती हुई
खा जाने वाली लाल–लाल आँखें,

गिने सदा ही उन्होंने मिले हुए प्रशस्तिपत्रों के ढेर,
लोगों के दिलों में इज्जत और सलाम,
साथ ही गिनते रहे बनिए और दूधवाले के तकाजे, रिश्तेदारों के व्यंग्य,
दहेज की डिमांड पर हाथ जोड़े जाने पर घर से लौटते ढेरों कदम,

जवान बेटा भी जब मांगता है अपनी नौकरी
के लिए रिश्वत की रकम
तो बढ़ जाती है बड़े बाबू की गिनती,
जुड़ जाती हैं चंद लानतें, कुछ बेबसी,
थोड़ी सी नाराजगी,

पर क्या करें, तमाम उम्र ईमानदारी
के सर्टिफिकेट को सीने से लगाये
रखने वाले बड़े बाबू जब उसे उलट पलट कर
देखते हैं तो घेर लेते हैं वही अंक
और शुरू हो जाती हैं कुछ और गिनतियाँ,
बड़े बाबू आज रिटायर हो गए।

जितेन्द्र कुमार मीना
निजी सहायक (एफ.एन.)

स्वाभिमान

मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान
जब तक अड़िग हो अपने पथ पर तब तक रहता है स्वाभिमान
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान...
अपने कर्तव्य पथ पर टिके रहो
बाधा कितनी भी बड़ी हो अड़िग रहो
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान...
स्वाभिमान न कभी गिरने में है, न कभी झुकने में है
स्वाभिमान तो बार–बार गिरकर फिर से चलने में है
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान...
चरित्र की पवित्रता से झलकता है स्वाभिमान
निज कर्म की पवित्रता से पनपता है स्वाभिमान
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान...
तुम पुष्प बनो और महको तुम, ये गौरव तुम्हें मुबारक हो
मैं कंटक हूँ मर्यादित हूँ, है कंटक बन अभिमान मुझे
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान...
तुम स्वर्ण बनो और दमको तुम, ये आभा तुम्हें मुबारक हो,
मैं लौह बन क्षुधा मिटाऊं यदि, लोहा बन तब अभिमान मुझे
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान...
युग–युग से अपना नाता है, पर नभ तुझको छू जाता है
हिम खण्डों पर बसे–बसे जग तुमको कम पाता है
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान...
तुम सफल बने लवलीन रहो, ये उन्नतता तुम्हें मुबारक हो
मैं राही हूँ भटकूँगा भी, राही बनकर अभिमान मुझे
ऐसे में यदि हास करो, तो मुस्कानें तुम्हें मुबारक हो
मैं युद्ध भूमि की धूलि हूँ, कुचले जाकर अभिमान मुझे
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान...
माना की हालात प्रतिकूल है, रास्तों पर बिछे शूल हैं
रिश्तों पर जम गई धूल है, पर तू खुद अपना अवरोध न बन
तू खुद उठ अपनी राह बना, मिलेगी उससे आपको प्रेरणा
कर्म अपना करो निर्धारित क्योंकि यही है स्वाभिमान का आधार
क्योंकि मन, कर्म, वचन से आता है स्वाभिमान।।

राजेश कुमार मीना
आशुलिपिक (प्रशासन)

जीवन में लक्ष्य का होना ज़रूरी क्यों हैं ?

यदि आपसे पूछा जाये कि क्या आपने अपने लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित कर रखे हैं तो आपके सिर्फ दो ही जवाब हो सकते हैः हाँ या ना।

लक्ष्य पर साधें निशानाः–

अगर जवाब हाँ है तो ये बहुत ही अच्छी बात है क्योंकि ज्यादातर लोग तो बिना किसी निश्चित लक्ष्य के ही अपनी ज़िन्दगी बिताये जा रहे हैं और आप उनसे कहीं बेहतर स्थिति में हैं। पर यदि जवाब ना है तो ये थोडा चिंता का विषय है, थोड़ा इसलिए क्योंकि भले ही अभी आपका कोई लक्ष्य ना हो पर जल्द ही सोच–विचार करके अपने लिए एक लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं।

लक्ष्य होते क्या हैं ?

लक्ष्य एक ऐसा कार्य है जिसे हम सिद्ध करने की मंशा रखते हैं।

कुछ उदाहरण लेते हैंः एक विद्यार्थी का लक्ष्य हो सकता हैः परीक्षा में 80% से ज्यादा अंक लाना। एक कर्मचारी का लक्ष्य हो सकता है अपने प्रदर्शन के आधार पर प्रमोशन पाना। एक गृहिणी का लक्ष्य हो सकता है Home Based Business की शुरूआत करना। एक समाजसेवी का लक्ष्य हो सकता हैः किसी गाँव के सभी लोगों को साक्षर बनाना।

लक्ष्य का होना ज़रूरी क्यों है ?

1 **सही दिशा में आगे बढ़ने के लिएः** जब आप सुबह घर से निकलते हैं तो आपको पता होता है कि आपको कहाँ जाना है और आप वहां पहुँचते हैं, सोचिये अगर आपको यह नहीं पता हो कि आप को कहाँ जाना है तो भला आप क्या करेंगे ? इधर उधर भकटने में ही समय व्यर्थ हो जायेगा। इसी तरह इस जीवन में भी यदि आपने अपने लिए लक्ष्य नहीं बनाये हैं तो आपकी ज़िन्दगी तो चलती रहेगी पर जब बाद में आप पीछे मुड़ कर देखेंगे तो शायद आपको पछतावा हो कि आपने कुछ खास प्राप्त नहीं किया।

   लक्ष्य व्यक्ति को एक सही दिशा देता है। उसे बताता है कि कौन सा काम उसके लिए जरूरी है और कौन सा नहीं। यदि उदेश्य हों तो हम उसके मुताबिक अपने आप को तैयार करते हैं। हमारा अवचेतन मन हमें उसी के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। दिमाग में लक्ष्य साफ़ हो तो उसे पाने के रास्ते भी साफ़ नज़र आने लगते हैं और इंसान उसी दिशा में अपने कदम बढा देता है।

2 **अपनी ऊर्जा का सही उपयोग करने के लिएः** भगवान ने इन्सान को सीमित ऊर्जा और सीमित समय दिया है। इसलिए ज़रूरी हो जाता है कि हम इसका उपयोग सही तरीके से करें। लक्ष्य हमें ठीक यही

करने को प्रेरित करता है। अगर आप अपने लक्ष्य को ध्यान में रख कर कोई काम करते हैं तो उसमें आपकी एकाग्रता और ऊर्जा का स्तर कहीं अच्छा होता है।

उदाहरण के लिए जब आप किसी पुस्कालय में बिना किसी खास किताब को पढ़ने के मकसद से जाते हैं तो आप यूँ ही कुछ किताबों को उठाते हैं और उनके पन्ने पलटते हैं और कुछ एक पन्ने पढ़ डालते हैं, पर वहीं अगर आप किसी प्रोजेक्ट रिपोर्ट को पूरा करने के मकसद से जाते हैं तो आप उसके मतलब की ही किताबें चुनते हैं और अपना काम पूरा करते हैं। दोनों ही स्थिति में आप समय उतना ही देते हैं पर आपकी कार्य कुशलता में जमीन–आसमान का फर्क होता है, इसी तरह जिंदगी में भी अगर हमारे सामने कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है तो हम यूँ ही अपनी ऊर्जा व्यर्थ करते रहेंगे और नतीजा कुछ खास नहीं निकलेगा। लेकिन इसके विपरीत जब हम लक्ष्य को ध्यान में रखेंगे तो हमारी ऊर्जा सही जगह उपयोग होगी और हमें सही परिणाम देखने को मिलेंगे।

3 **सफल होने के लिए:** जिससे पूछिए वही कहता है कि मैं एक सफल व्यक्ति बनना चहता हूँ, पर अगर ये पूछिए कि क्या हो जाने पर वह खुद को सफल व्यक्ति मानेगा तो इसका उत्तर कम ही लोग पूरे विश्वास से दे पाएंगे। सबके लिए सफलता के मायने अलग–अलग होते हैं, और यह मायने लक्ष्य के द्वारा ही निर्धारित होते हैं तो यदि आपका कोई लक्ष्य नहीं है तो आप एक बार औरों की नज़र में सफल हो सकते हैं पर खुद कि नज़र में आप कैसे निर्णय करेंगे कि आप सफल हैं या नहीं ? इसके लिए आपको अपने द्वारा ही तय किये हुए लक्ष्य को देखना होगा।

4 **अपने मन के विरोधाभास को दूर करने के लिए:** हमारी जिंदगी में कई अवसर आते–जाते रहते हैं। कोई चाह कर भी सभी के सभी अवसर का फायदा नहीं उठा सकता। हमें अवसरों को कभी हाँ तो कभी ना करना होता हैं ऐसे में ऐसी परिस्थितियों का आना स्वाभाविक है जब हम निर्णय नहीं कर पाते कि हमें क्या करना चाहिए, ऐसी परिस्थितियों में आपका लक्ष्य आपका मार्गदर्शक कर सकता हैं। वहीं अगर सामने कोई लक्ष्य ना हो तो हम तमाम पहलुओं का मूल्यांकन करते रह जायें और अंत में शायद ज्यादा वेतन ही निर्णायक कारण बन जायें।

दोस्तों अर्नोल्ड एच ग्लासगो का कथन,

''फुटबाल की तरह जिन्दगी में भी आप तब तक आगे नहीं बढ़ सकते जब तक आपको अपने लक्ष्य का पता ना हो।''

मुझे बिलकुल उपयुक्त लगता है, तो यदि आपने अभी तक अपने लिए कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किया है तो इस दिशा में सोचना शुरू कीजिये, लक्ष्य बनाइये, बड़े लक्ष्य बनाइये और उन्हें हासिल करके ही दम लीजिये।

नीतू सिंह
कार्यलय सहायक (टी.एंड.ए./आर)
(अनुबंधित)

कैशलेश ट्रान्जैक्शन

भारत सरकार लोगों को कैशलेस अर्थव्यवस्था की तरफ प्रोत्साहित कर रही है। कैशलैस अर्थव्यवस्था को तभी पाया जा सकता है जब अर्थव्यस्था में धीरे–धीरे कैश को कम किया जाए और सभी लेन–देन इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे प्रत्यक्ष डेबिट, क्रेडिट और डेबिट कार्ड, इलेक्ट्रॉनिक क्लिरिंग और भुगतान प्रणाली जैसे तत्काल भुगतान सेवा (आईएमपीएस), राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर (एनईएफटी) और रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट (आरटीजीएस) से इस्तेमाल किया जाए। अब लोग ऑनलाइन पेमेंट (Online Payment), डेबिट कार्ड (Debit Card), क्रेडिट कार्ड (Credit Card), रुपेकार्ड (Rupaycard), ई–वालेट (E -Wallet) और विभिन्न प्रकार के मोबाइल एप्प (जैसे Paytm, Freecharge) का सहारा ले रहे है ऐसे में अब इन सभी साधनों का उपयोग कैसे करते है, इसे जानना जरुरी हो जाता है।

"अब हमें बटुए रखने की जरूरत नहीं है, अब हमारा मोबाइल ही हमारा बैंक ब्रांच बन चूका है और इसका उपयोग करना सभी नौजवान अपने आस–पास के लोगो को भी सिखाये"–नरेंद्र मोदी।

कैशलेश पेमेंट करने के तरीके

1. **बैंकिंग कार्ड (डेबिट/क्रेडिट/अन्य)/स्वाइप मशीन (पी ओ एस मशीन)**
   Banking Cards (Debit/Credit/Others) / Swipe Machine (POS Machine)

   भारत में ऑनलाइन पेमेंट में डेबिट कार्ड (Debit card) और क्रेडिट कार्ड (Credit card) का बहुत बड़ा सहयोग है। पहले आम आदमी डेबिट कार्ड का उपयोग बस एटीएम मशीन से पैसे निकलने में किया करता था और रिचार्ज में भी इससे मदद मिलती थी। आजकल हर बैंक द्वारा डेबिट कार्ड दिया जाता है जिसका उपयोग हम कैशलेश पेमेंट के रूप में भी कर सकते है। हम जब भी कहीं ऑनलाइन पेमेंट करते है तो इसके लिए हमे सिर्फ डेबिट कार्ड और इसका पासवर्ड याद रखना होता है और जब भी कहीं हम शॉपिंग करते हैं तो वहां लगी स्वाइप मशीनों के द्वारा हम अपना पेमेंट खुद कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त डेबिट कार्ड का उपयोग अपने घर बैठे ऑनलाइन पेमेंट जैसे बिजली, डिश टीवी रीचार्ज, मोबाइल रीचार्ज, ऑनलाइन शॉपिंग और अन्य सभी भुगतान के रूप में जो ऑनलाइन पेमेंट लेते है, उनमें कर सकते हैं।

   पी ओ एस मशीन (कार्ड स्वाइप मशीन) एक छोटी मशीन होती है जिसमें कस्टमर को अपना डेबिट कार्ड और एटीएम, क्रेडिट कार्ड को स्वाइप करना होता है और पिन नंबर डालकर ऑनलाइन पेमेंट कर दिया जाता है।

2- **अनस्ट्रक्चर्ड सप्लीमेंट्री सर्विस डाटा (यूएसएसडी)** Unstructured Supplementary Service Data (USSD)

   टेक्नोलॉजी ने मोबाइल बैंकिंग और इन्टरनेट बैंकिंग जैसी सुविधाओं के जरिये बैंकों को आपके हाथों तक पहुंचा दिया है। अब आप मोबाइल से ही पैसे भेज सकते हैं और बैंक बैलेंस जान सकते हैं। मोबाइल बैंकिंग को और आसान बनाने के लिए भारत सरकार ने USSD Banking नाम से एक नयी सुविधा शुरू की है। यह बैंकिंग सुविधा मोबाइल फोन में *99# डायल करके प्रयोग की जा सकती है इसीलिए इसे *99# Banking कहते हैं। यूएसएसडी बैंकिंग का फायदा आप साधारण फोन से भी ले सकते हैं। दरअसल USSD Banking सुविधा उन लोगों को ध्यान में रखकर शुरू की गयी है जिनके पास या तो स्मार्टफोन नहीं है या वो इन्टरनेट का प्रयोग नहीं करते। इस तरह से देश में अधिकतर लोग मोबाइल बैंकिंग सुविधा से जुड़ सकेंगे।

   यूएसएसडी ¼USSD½ क्या है ?

   यूएसएसडी (USSD) एक प्रकार की सुविधा है जिससे आप सीधे टेलीकॉम कंपनी के कंप्यूटर से जुड़ जाते हैं। आजकल दुकानदार मोबाइल रिचार्ज इसी तरीके से करते हैं। मोबाइल का बैलेंस भी इसी तरीके से तुरंत पता चल जाता है। USSD सुविधा का प्रयोग करने के लिए आपको अपने फोन पर एक विशेष कोड डायल करना

पड़ता है। इस कोड की शुरुआत में *(स्टार) तथा अंत में # (हैश) का चिह्न होता है। अलग–अलग सुविधाओं के लिए अलग अलग USSD Codes होते हैं।

*99# USSD कोड बैंकिंग सुविधाओं के लिए एक विशेष कोड है। अन्य USSD कोड की तरह यह सिर्फ टेलिकॉम कंपनी के सर्वर से ही नहीं बल्कि बैंक के सर्वर से भी जुड़ता है। ये सीधे आपको अपने खाते से जोड़कर आसानी से लेनदेन की सुविधा देता है। यह तरीका आपके खाते से जुड़ने के लिए आपके मोबाइल नंबर का प्रयोग करता है। इसलिए यह आवश्यक है कि आपका मोबाइल नंबर आपके खाते से जुड़ा हो। अगर ऐसा नहीं है तो *99# बैंकिंग का लाभ उठाने के लिए आपको अपने मोबाइल नंबर को खाते से जोड़ना होगा। *99# बैंकिंग कोड सभी बैंकों में काम करता है और इससे एक बैंक के खाते से दूसरे बैंक के खाते में पैसे भेजे जा सकते हैं । इसके अलावा बैलेंस जानकारी और मिनी स्टेटमेंट देखने जैसी और भी कई सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं । इस सेवा को NPCI (भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम) मैनेज करती है

- अपने रजिस्टर्ड नंबर से *99# डायल करें।
- अगली स्क्रीन पर अपने बैंक का तीन अक्षरों वाला नाम डालें और भेज दें । उदाहरण के लिए भारतीय स्टेट बैंक के ग्राहक SBI लिखेंगे। बैंक के नाम की जगह पर आप अपने बैंक के आईएफएससी कोड़ के शुरुआती चार अक्षर या फिर बैंक के संख्या कोड के शुरुआती दो अक्षर भी लिख सकते हैं ।
- अगली स्क्रीन पर आपके सामने एक सूची दिखेगी जिसमें सभी उपलब्ध सेवाएं लिखी होंगी । हर सेवा के आगे एक अंक लिखा होगा ।

3. आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम (एईपीएस) AADHAR Enabled Payment System (AEPS)

सरकार ने आधार इनेबल्डक पेमेंट सिस्टम (AEPS) की शुरुआत की है। इस सेवा से सीधे एक आधार संबद्ध खाते से दूसरे आधार संबद्ध बैंक खाते में पैसों का ट्रांसफर हो जाएगा। यहां डेबिट कार्ड की कोई जरूरत नहीं होगी। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, देश के एक अरब से ज्यादा लोगों के पास अब आधार कार्ड है। कैशलेस ट्रांजैक्शन को प्रोत्साहित करने के लिए केंद्र सरकार ने हाल ही में एक ऐप लॉन्च करने की घोषणा की है। इसके जरिए ग्राहक अपनी आधार संख्या और फिंगरप्रिंट के जरिए दुकानदारों को भुगतान कर सकेंगे। सरकार जल्द ही मोबाइल बनाने वाली कंपनियों को फोन में अंगूठे या आइरिस पहचानने वाले फीचर लाने को कह सकती है ताकि आधार से भुगतान की प्रक्रिया को सरल बनाया जा सके।

4. यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) Unified Payment Interface (UPI)

यूपीआई यानी यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस (Unified Payment Interface) पैसे भेजने का एक सिस्टम है। अभी तक एनईएफटी, आरटीजीएस और आईएमपीएस सिस्टम के जरिए पैसा भेजा जाता रहा है। यूपीआई इनसे ज्यादा एडवांस्ड तरीका है। इस पेमेंट सिस्टम को इस तरह से बनाया गया है कि आम लोग भी इसे आसानी से इस्तेमाल कर सकें।

यूनीफाइड पेमेंट इंटरफेस सिस्टम मोबाइल एप्प पर आधारित है। यानी ये इंटरनेट इस्तेमाल करने वाले स्मार्टफोन में काम करता है। यूपीआई को इस्तेमाल करने के लिए इंटरनेट से जुड़ा होना जरूरी है। फिलहाल यूपीआई एप्प एन्ड्रॉएड ऑपरेटिंग सिस्टम के लिए ही बनाया गया है। आपको पता ही होगा कि दुनिया के 80% फोन एन्ड्रॉएड ऑपरेटिंग सिस्टम का इस्तेमाल करते हैं। भविष्य में यूपीआई आईफोन और विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम में भी काम करेगा।

यूपीआई पेमेंट सिस्टम आपके मोबाइल नंबर के जरिए आपके खाते की जानकारी लेता है। मोबाइल नंबर के जरिए ये पक्का करता है कि आप अपने ही खाते से जुड़ें। इसका मतलब ये भी है कि अगर आपने बैंक में अपना मोबाइल नंबर नहीं दिया है तो यूपीआई का फायदा नहीं ले पाएंगे। इतना ही नहीं अगर आप अपने स्मार्टफोन

से अपना सिम निकाल लेंगे तो भी ये एप्प काम नहीं करेगा। यूपीआई के जरिए आप देश में किसी भी बैंक खाते में पैसे भेज सकते हैं। ऐसा नहीं है कि अगर आप स्टेट बैंक के ग्राहक हैं तो सिर्फ स्टेट बैंक के ग्राहकों को ही पैसे भेज पाएंगे। बल्कि किसी भी बैंक के ग्राहक को पैसे भेज सकते हैं।

यूपीआई एक पेमेंट सिस्टम है और इसे किसी भी एप्प का हिस्सा बनाया जा सकता है। इसके बनाने वाली एजेंसी NPCI (National Payment Corporation) यूपीआई प्लेटफॉर्म का लाइसेंस देती है। बैंकों को ही यूपीआई सिस्टम का इस्तेमाल करने की इजाजत मिलती है। लेकिन बैंक चाहें तो अपने नाम पर कुछ और लोगों को यूपीआई का इस्तेमाल करने दे सकते हैं। कुछ बैंक यूपीआई प्लेटफॉर्म वाला नया एप्प लेकर आए हैं, जैसे ICICI बैंक ने अपने पुराने एप्प iMobile में ही यूपीआई को मिला लिया है। वहीं एसबीआई ने नया एप्प एसबीआई पे (SBI Pay) लॉन्च किया है। गूगल प्लेस्टोर में अगर आप यूपीआई सर्च करेंगे तो आपको कई यूपीआई एप्प मिल जाएंगे।

5. मोबाइल वालेट/ई–वालेट ¼Mobile Wallets / E - wallet)

पहले लोग वॉलेट यानि बटुए को अपने पॉकेट में रखते थे लेकिन आजकल इसी बटुए को अब मोबाइल में भी रख सकते है जिसे ई–वालेट कहते हैं। इसके लिए हमारे पास खुद का एक बैंक अकाउंट होना जरुरी है और अपने बैंक अकाउंट के साथ अगर इंटरनेट बैंकिंग का प्रयोग करते है तो हमारे लिए और भी अच्छा है।

ई–वालेट के लिए हमारे पास एक स्मार्टफोन के साथ उसमें नेट कनेक्टिविटी यानि इंटरनेट की सुविधा भी होना जरुरी है जो आजकल लगभग सभी युवाओं के पास होता है। अपने मोबाइल के Playstore में जाकर हमे SBI buddy, Paytm, Freecharge, Mowikwik, Novapay, Payumoney जैसे एप्प डाउनलोड कर सकते हैं जिनके द्वारा इनमें से किसी एप्प को सक्रिय करने के बाद हमारा मोबाइल एक चलता फिरता बैंक या ई–वालेट के रूप में तैयार हो जाता है।

जब से 500 और एक हजार के नोट बंद हुए है छोटे–छोटे पेमेंट के लिए Paytm का उपयोग बहुत किया जाने लगा है। ऐसे में पेमेंट करने की इस प्रोसेस को बहुत बढ़ावा मिला है क्योंकि ये एक एंड्राइड एप्लीकेशन है जिसको उपयोग करना बहुत ही आसन भी है। आप जितने पैसा भेजना और प्राप्त करना चाहते है वो आपके Paytm E-Wallet में आ जाते है और आप उन पैसो को अपने बचत बैंक खाता में भेज सकते है जिससे आपको बिना कैश के पेमेंट करने के लिए बहुत फायदा भी मिलेगा। Paytm में एक ई–वॉलेट भी होता है जिसमे आप अपने ऑनलाइन पैसे को मैनेज कर सकते है। Paytm से पेमेंट करने के लिए आपके पास डेबिट कार्ड या एटीएम, और क्रेडिट कार्ड होना जरुरी है जिसके माध्यम से आप अपने बैंक खाता को Paytm से जोड़ सकते है। Paytm का उपयोग सबसे ज्यादा ऑनलाइन रीचार्ज के लिए होता था पर अब इसका उपयोग बहुत जगह होता है। एक चाय वाले से लेकर बड़े बड़े पेमेंट भी आज कल Paytm से होने लगे है। हम आपको बता दे की paytm से आप यूटिलिटी बिल जैसे बिजली का बिल ऑनलाइन और पानी का बिल ऑनलाइन भर सकते है और इसमें आपका कोई अलग से चार्ज भी नहीं लगता है।

6. इंटरनेट बैंकिंग ¼Internet Banking½

यदि आपको किसी को पैसे भेजने है तो आप इलेक्ट्रोनिकली पैसे को ट्रांसफर कर सकते हो। ऑनलाइन पैसे ट्रांसफर करने के तीन तरीके हैं।

क) पहला तरीका है एनईएफटी (NEFT) यानि नैशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर : – इससे एक बैंक खाते से दूसरे बैंक खाते में पैसे ट्रांसफर कर सकते हैं। एनईएफटी द्वारा पैसा बैंक के कार्य–समय के दौरान ट्रांसफर होता है । एनईएफटी से पैसा भेजने की अधिकतम कोई सीमा नहीं है। एनईएफटी से पैसा भेजने का शुल्क 5 रुपए से लेकर 25 रुपए लगता है।

ख) दूसरा तरीका है आरटीजीएस (RTGS) यानी रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट : – आरटीजीएस का इस्तेमाल अधिक पैसे ट्रांसफर करने के लिए होता है। इसमें 2,00,000 रुपए तुरंत ट्रांसफर हो जाते हैं और यह सर्विस 24 घंटे और सातों दिन के लिए उपलब्ध हैं।

ग) तीसरा तरीका है आई एम पी एस (IMPS) यानि ईमीडिएट पेमेंट सर्विस : – इससे अधिकतम 2,00,000 रुपए ट्रांसफर किए जा सकते हैं और बैंक का पेमेंट ट्रांसफर शुल्क अलग होता है।

संकलनकर्ता
हर्ष शर्मा
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस.)

मैंने माँ को देखा है

मैंने माँ को देखा हैं,
तन और मन के बीच,
बहती हुई किसी नदी की तरह
मन के किनारे पर निपट अकेले,
और तन के किनारे पर,
किसी गाय की तरह बंधे हुए,

मैंने माँ को देखा हैं,
किसी मछली की तरह तड़पते हुए बिना पानी के,
पर पानी को कभी नहीं देखा तड़पते हुए बिना मछली के,

मैंने माँ को देखा है,
जाड़ा, गर्मी, बरसात,
सतत खड़े किसी पेड़ की तरह,

मैंने माँ को देखा है,
हल्दी, तेल, नमक, दूध, दही, मसाले में सनी हुई,
किसी घर की गृहस्थी की तरह,

मैंने माँ को देखा है,
किसी खेत की तरह जुतते हुए,
किसी आकृति की तरह नपते हुए,
घड़ी की तरह चलते हुए,
दिए की तरह जलते हुए,
फूलों की तरह महकते हुए,
रात की तरह जगते हुए,
नींव में अंतिम ईंट की तरह दबते हुए,

मैंने माँ को देखा है,
पर.... माँ को नहीं देखा है,
कभी किसी चिड़िया की तरह उड़ते हुए,
खुद के लिए लड़ते हुए,
बेफिक्री से हँसते हुए,
अपने लिए जीते हुए,
अपनी बात करते हुए,
मैंने माँ को कभी नहीं देखा है,
मैंने बस माँ को माँ होते देखा है।

पोलसन
एम.टी.एस. (एफ.एन.)

वृक्ष से जीवन है

आज सारे जंगल के पेड़ों में एक हलचल सी मची थी। बहुत सारे पेड़ मनुष्य के द्वारा काट दिए गए थे। बचे हुए पेड़ों मैं गुस्सा था। सभी ने मिलकर तय किया कि वो अपने देवता से मिलेंगे। सभी पेड़ अपने देवता के पास गए और उनसे कहा कि मानव जाति उनके विनाश पर उतारू है, जबकि मानव का जीवन पेड़ों से ही चलता है। सभी पेड़ों ने कहा, प्रभु! हमें आप आज्ञा दें, तो हम जो भी मनुष्य को देते हैं वो सब देना बंद कर दें।

देवता ने कुछ देर सोचा और बोले, अगर तुमने मनुष्य को दी जाने वाली ऑक्सीजन बंद कर दी तो सभी मानव जाति कुछ ही मिनट में समाप्त हो जायेगी। पर मनुष्य को सबक सिखाना भी आवयश्क है। तुम लोग ऐसा करो कि मानव को दी जाने वाली साग, सब्जी और अन्न देना बंद कर दो। सभी पेड़ों ने देवता का धन्यवाद दिया और उन्होंने अगले दिन से सब्जी, अन्न और चावल देना बंद कर दिया।

2-3 दिन बाद ही धरती पर सभी मानव लोगों में एक बेचैनी सी फैल गयी। सब्जी और अन्न का मिलना मुश्किल हो गया। भूख के कारण लोग बीमार होने लगे। पूरी धरती पर हाहाकार मच गया। सभी धर्मों के लोग अपने अपने भगवान् की पूजा करने लगे। भगवान् प्रकट हुए और बोले, भक्तों तुम जाकर पेड़ों के देवता की पूजा करो तभी इस कष्ट से मुक्ति पाओगे।

मनुष्य ने पेड़ों के देवता की पूजा की, वो प्रकट हुए और बोले तुम लोग वादा करो की अपने सुख और आराम के लिए पेड़ नहीं काटोगे और लकड़ी का प्रयोग सिर्फ अपनी मूलभूत जरुरत पूरा करने में करोगे, साथ ही साथ जितने पेड़ काटोगे उससे ज्यादा लगाओगे। सभी मनुष्य परेशान थे । उन्होंने ऐसा करने की हाँ भर दी। पेड़ों के देवता ने सभी पेड़ों को आदेश दिया और कहा कि अब तुम पहले की तरह अन्न और सब्जी मानव जाति को देना शुरू कर दो। पेड़ों ने अगले दिन से अन्न और सब्जी देना शुरू कर दिया, मनुष्य का जीवन पहले की तरह चलने लगा।

मनुष्य पेड़ों के देवता को दिए वचन को कुछ दिन बाद भूल गया और उसने जंगल को बुरी तरह से काटना जारी रखा। पेड़ दुखी होकर दुबारा पेड़ों के देवता के पास गए। अबकी बार पेड़ों के देवता भी मनुष्य पर क्रोधित हो गए और उन्होंने जोर से चीख कर कहा, जाओ! तुम मनुष्य को ऑक्सीजन देना बंद कर दो। पेड़ों ने हुँकार भरी और ऑक्सीजन देना बंद कर दिया। सारे मानव कुछ ही सेकंड में बचाओ बचाओ करके रोने लगे।

टीना भी बचाओ बचाओ चिलाने लगी। तभी उसकी मम्मी ने उसे जोर से हिलाया। टीना जाग उठी, उसकी मम्मी ने पूछा तुम क्यों चिल्ला रही थीं। टींना ने पेड़ों के देवता वाली पूरी कहानी सुना दी। मम्मी ने उससे कहा, बेटी! पेड़ों के देवता ने सही बात कही। हम लोग जिस तरह से जंगल और पेड़ काट रहे हैं उसका नुकसान आज नहीं तो कल हमें भुगतना पड़ेगा क्योंकि मनुष्य का जीवन वृक्षों से ही है। वृक्ष ही जीवन हैं। अब तुम उठो और विद्यालय जाने के लिए तैयार हो जाओ। टीना तैयार होने लगी और उसने मन ही मन सोचा कि स्कूल जाकर वो सभी बच्चों को पेड़ों के देवता की कहानी सुनाएगी।

वांशी अस्थाना
सुपुत्री श्री विवेक अस्थाना
निदेशक (एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी)

समाज

सभाज वह शब्द है जिसे हम सब ने अपने जीवन में सुना भी है और अपने आसपास देखा भी है। लेकिन समाज को परिभाषित करना अपने आप में एक कठिन कार्य है। समाज का अस्तित्व मनुष्य के अस्तित्व के साथ ही इतिहास में देखा जा सकता है। प्राचीनकाल से ही समाज मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। हर समाज अपने सदस्यों के लिए कुछ नियमों का प्रावधान भी रखता है जिनका पालन करना उस समाज में रहने के लिए आवश्यक माना जाता है और इन नियमो के पालन से ही अनुशासनपूर्ण जीवन व्यतीत किया जा सकता है। इस बात की पुष्टि मनुष्य और विभिन्न जानवरों को देखकर सरलता से की जा सकती है। समय के साथ और विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य विभिन्न समाज का प्रतिनिधित्व करते हुए पाया जाता है। कभी जाति, कभी धर्म, कभी प्रदेश तो कभी राष्ट्रीयता के नाम पर वह अपने अनुकूल समाज का हिस्सा बनकर उपयुक्त लाभ उठाने का प्रयास करता है और यही लाभ कहीं न कहीं किसी दूसरे सदस्य की समस्या का कारण बनकर उभर आता है। तो अब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि जिन नियमों का पालन करते हुए मनुष्य लाभान्वित होता है और दूसरों के लिए समस्या पैदा कर बैठता है उन नियमों की वैधता किस आधार पर तथा किसके द्वारा तय की जाती है और क्या बदलते समय के साथ इन नियमों का औचित्य उतना ही रहता है जितना कि उनका निर्माण करते समय था, यह अपने आप में एक गहन सोच का विषय है।

जैसे देश के संविधान में लिखे गए नियमों में समय–समय पर बदलाव की जरूरत सामने आने पर उनको यथोचित संशोधन के साथ लाया जाता है वैसे ही क्या समय–समय पर समाज के नियमों को भी बदलाव की जरूरत है ? मनुष्य जिस समाज का प्रतिनिधित्व करता है उस समाज के नियमों का बड़ा ही दकियानूसी तरीके से अनुसरण भी करता है। मनुष्य को प्रकृति ने सोचने समझने की क्षमता दी है लेकिन कई बार ऐसे उदाहरण सामने आते हैं कि वो बिना अपना तर्क प्रयोग किये, बनाये गए उन नियमों को ही सब कुछ मान बैठता है। जबकि समाज में आने वाली समस्याएं हमेशा समान नहीं होती तो समाज के द्वारा अपनाये गए नियमों को गणित के सूत्रों की तरह प्रयोग न करके उनको यथोचित संशोधन के साथ अपनाया जाना चाहिए। लेकिन आज एक बड़ी समस्या सामने है जिसमें सभी प्रायः इस वाक्य को कहते पाये जाते हैं कि समाज क्या कहेगा ? याद रखने की आवश्यकता है कि समाज के नियम पत्थर की लकीर नहीं हैं और उनमें भी गलतियाँ हो सकती हैं। लेकिन आज का दृश्य कुछ और ही है। स्वंय को सभ्य समाज के नाम से संबोधित करने वाले समाज में आज कुछ ऐसे कार्य किये जा रहे है जो शायद किसी समाज के सभ्य होने पर संशय प्रकट करते हैं।

कुछ प्रश्न उठते हैं इस सभ्य समाज के संदर्भ में : क्या लड़की के घर में जन्म लेने पर लड़के जितना उत्साह दिखाया जाता है ? क्या आज दहेज़ प्रथा की आड़ में वधु पक्ष को पीड़ित नहीं किया जाता है ? क्या इस समाज में लड़का लड़की को समान अधिकार और स्वतंत्रता दी जाती है ? क्या आज भी देश की बेटियों के

साथ दुष्कर्म होने पर उनके साथ खड़े रहने के बजाय उनको हीनभावना के साथ नहीं देखा जाता है ? क्या यह समाज जाति के नाम पर आज कुछ लोगो के साथ बुरा व्यवहार नहीं करता हैं ? क्यों आज भी लोग एक अनसुना उपनाम सुनने पर उस व्यक्ति की जाति जानने को उत्सुक हो जाते हैं ? क्या धर्म के नाम पर आज शांति भंग करने के प्रयास नहीं किये जा रहे हैं ? क्या अपनी जाति या धर्म के बाहर जाकर विवाह कर लेने वाले दम्पति को समाज की स्वीकृति सरलता से दी जा रही है ? धर्म और जाति के नाम पर समाज को विभाजित करने वाली ताकतों को क्या आज समाज का समर्थन नहीं मिल रहा है ? राष्ट्रीयता के नाम पर विभिन्न सीमाओं पर आज देशों के सैनिको को अपनी जान की आहूति नहीं देनी पड़ रही है ? विभिन्न रंग वर्ण का होने पर क्या दूसरे राष्ट्र के नागरिकों का मजाक नहीं बनाया जा रहा है ?

यदि समाज में उपरोक्त सब कुरीतियां जीवित है तो क्या उस समाज को सभ्य कहना उचित होगा? सही मायनों में समस्या कुछ और है, जैसे एक छोटा सा दाग हमारे कपड़ों की शोभा को विकृत करता है ऐसे ही कुछ लोग इस सभ्य समाज की गरिमा को ठेस पहुँचा रहे हैं। लेकिन जरूरत है इन छोटे छोटे दागों को सुधारने की। जरूरत है आज रूढ़िवादी नियमों से उठकर आज के अनुरूप चीजों को समझने की। किसी भी सभ्यता को पूर्णतः गलत या सही न मानकर अपने विवेक का प्रयोग कर उस सभ्यता की बहुमूल्य रीतियों को अपने समाज का हिस्सा बनाने की । जरूरत है आज समाज के जर्जर हो चुके नियमों को सिरे से खारिज करने की। जरूरत है आज अपने पूर्वजों द्वारा बनाई गयी बहुमूल्य रीतियों को समाज में उद्घोष के साथ फैलाने की। जरूरत है आज हमारी शिक्षा पद्धति को मजबूत बनाने की जो आने वाली पीढ़ियो को विकेकानुसार निर्णय लेने में सक्षम बनाये। जरूरत है आज समाज की महिलाओं के सशक्तिकरण की। जरूरत है आज समाज से सभी कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने की, जिससे हमारे सभ्य समाज के सभ्य होने पर कभी हमें किसी भी प्रकार का संशय न हो।

प्रणय दिवाकर
कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारी
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

क्रं. स.	वर्ष 2016–17 में सेवानिवृत होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	
1.	श्री जे. एम. सूरी	उप महानिदेशक
2.	सुरेन्द्र पाल	सहायक अनुभाग अधिकारी
3.	कालू सिंह	मशीनिस्ट
4.	मोहन लाल नावरिया	एम.टी.एस.
5.	कल्प नाथ साह	एम.टी.एस.

स्त्री–विमर्श

औरतों की स्थिति को लेकर कई सवाल मेरे दिमाग में घूमते रहते हैं। परिवार की मान–मर्यादा, शिष्टता की सीमा रेखा लड़कियों को ही क्यों समझाई जाती हैं? सुरक्षा के घेरे में वही जिंदगी क्यों गुजारें? क्यों सारे व्रत–उपवास, नियम–धर्म औरतों के ज़िम्मे सौंप दिए जाते हैं? ये सारे सवाल मुझे कुरेदते रहते हैं। मेरे मन के अंदर इसके विरोध का गुबार बढता गया। मैंने सोच लिया कि सबसे पहले अपने–आपको इन परिस्थितयों से बाहर निकालना होगा, जिससे आने वाले समय में औरतों का अपमान न हो।

लड़की अपने जन्म से लेकर अंत तक संघर्ष में ही जीती रहती है। एक काम तो ईश्वर ने बहुत अच्छा किया है कि औरत बनाने के साथ–साथ गुण, संस्कार, शांति, संघर्ष और दुःख के आँसू भी अपने अंदर समेटने की शक्ति केवल इन्हीं को ही प्रदान की । जैसे नदी की लहरें किनारे से बाहर निकलने की कोशिश करती हैं, पर नदी का इतना बड़ा हद्य है कि पानी की लहर को किनारे से बाहर निकलने ही नहीं देती बल्कि आनेवाले तूफ़ान को अपने अंदर ही रोक लेती। इसी तरह औरतों का हृदय भी इतना विशाल है फिर चाहे कितना बड़ा दुःख हो, सबको अपने अंदर समेट कर फिर जिंदा हो जाती हैं। मानो कुछ हुआ ही नहीं...। वे अपने आँसुओं की बहती धारा को अपने अंदर ही समा लेती हैं, चाँद की चाँदनी की शांत किरणों की तरह। इसलिए औरत चाहे वह किसी की बेटी, बहू, बहन या माँ हो सभी परिस्थितियों का सामना करके अपनी इच्छाओं को हद्य के हवन में सामग्री बनाकर स्वाहा कर देती है। वह अपने कीमती आँसू गंगाजल समझ कर शुद्ध वातावरण करने के लिए पवित्र जल से धो डालती है।

इतना सब करने के बाद भी औरतों को कितना कुछ सुनने को मिलता है? घर में यदि कोई नुकसान हो जाए तो लोग औरत पर ही चिल्लाना शुरू कर देते हैं। और तो और न जाने किन–किन शब्दों की वर्णमाला चुन–चुनकर सुनाते हैं जैसे कुलटा, बिनाअक्ल की, बदनसीब, कर्मजली, चुडैल, डायन, निक्कमी कुल का नाश करके ही रहेगी। और तो और उसके मायके तक को भी नहीं बख़्शते, उनको भी अपमान के घेरे में जकड़ लेते हैं। शादी के बाद तो औरत और भी अपने आँचल को समेट कर घूँघट की लाज, हाथों में चूड़ियाँ, पाँव में पायल के साथ दो परिवारों की मान–मर्यादा की डोर में बँधी हुई रहती है। दोनों परिवारों की आन और शान रखने के लिए सब कुछ सहकर अपने आपको जिंदा रखती है।

जिन मान्यताओं–परंपराओं के अनेक गुण भरे हुए हैं, उनकी जड़े इतनी गहरी हैं कि वे उनके स्वभाव का अंग बन चुकी हैं। इनके निर्माण में औरत का भी समाज के समान योग है। लेकिन जब विपरीत परिस्थितियों में आदर्श परंपराओं को निभाती हुई औरत आत्मविश्वास और कुशलता के साथ शक्तिशाली बनकर श्रेष्ठ पथ की ओर बढ़ती जाएगी, तब उसे रोकने वाला कोई नहीं होगा।

माँ तुम देना जन्म मुझको, मिटा दूँगी अँधियारा,
श्रेष्ठ पथ पर चल कर, कर दूँगी उजियारा।

नूपुर शर्मा
आशुलिपिक (कार्मिक)

मुक्ति

जीवन भी एक कविता है
प्रवाह है इसका ''कर्म''
द्वंद इसके, लय और ताल
क्या जाति, क्या धर्म।

जाति, धर्म, क्षेत्रवाद के
तोड़ दो बंधन मिलकर
गगन में गहरे छाये तिमिर को
कुचलो, बनकर दिनकर।

निशामहल की कोठरियों में
प्रभात कैद है, जागो
निशामहल का सर्वनाश कर
रश्मि जग में फैला दो।

पंख तेरे कमजोर, तो क्या
उड़ने का प्रयास करो
सारा अम्बर तुम्हारा है
खुद पर तुम विश्वास करो।

कल्पना की छाती पर कवि
गीत यथार्थ का लिख डालो
मुक्ति का गायक बनकर
सत्य को निर्भय कर डालो।

मनोरंजन
सहायक महानिदेशक
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

बिटिया

प्यारी सी, दुलारी सी
नन्ही सी, न्यारी सी
एक परी मिल गयी
सारी जिंदगी बदल गई ।

पंखुड़ी हो जैसे –
गुलाब की ।
बोले तो –
मोती बिखर पड़े ।
आँखें उसकी
जैसे मृगनयन ।

दादा की प्यारी है,
नाना की दुलारी है,
कहने को बच्ची है
लेकिन दिल की सच्ची है ।

माता की जान है,
पिता की शान है,
नन्ही सी बिटिया
परिवार का मान है ।

चाचा की लाड़ली है,
मामा की चहेती है,
प्यारी सी गुड़िया
घर–आंगन की रौनक है ।

सबकी आँखों को भाती है,
दिल को लुभाती है,
उसकी छवि जो देखे
उसके मन में बस जाती है ।

अमर दीप
कनिष्ठ अनुवादक

जांचें हिंदी की वर्तनी

कंप्यूटर पर अंग्रेजी में काम करते समय बहुत–सी चीजें बेहद सामान्य लगती हैं, लेकिन ऐसी बहुत–सी चीजें हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं में या तो उपलब्ध नहीं हैं या फिर यूजर्स को उनकी जानकारी कम है। वर्तनी की जांच ऐसा ही एक फीचर है, जिसके बारे में कम लोगों को पता है कि अब यह हिंदी में भी उपलब्ध है और कई अन्य भारतीय भाषाओं में भी।

अंग्रेजी में काम करते समय आपने कई बार देखा होगा कि आपके लेख में कुछ शब्दों को लाल रंग की सर्पिल रेखा के साथ अंडरलाइन कर दिया जाता है। यह इस बात का संकेत है कि उन शब्दों की स्पेलिंग ठीक नहीं है। हिंदी में स्पेलिंग की अवधारणा नहीं है, क्योंकि वह एक ध्वन्यात्मक भाषा है, जिसमें जैसे उच्चारण किया जाता है, वैसे ही लिखा भी जाता है। किसी शब्द की स्पेलिंग उसकी ध्वनि के अनुसार ही होती है, अंग्रेजी की तरह नहीं, जहां लाफ और बट जैसे शब्दों की स्पेलिंग उनके उच्चारण से अलग है। इसी वजह से अंग्रेजी में शब्दों की स्पेलिंग याद करनी पड़ती है। हिंदी में मात्राओं, आधे और पूरे अक्षर, रेफ, रकार, संयुक्ताक्षरों आदि की गलतियां आम हैं। अफसोस है कि हिंदी के बहुत से यूजर्स को इस बात की जानकारी नहीं है कि अब वे अपने हिंदी दस्तावेजों में वर्तनी की जांच कर सकते हैं। यहां किसी शब्द को अशुद्ध लिखे जाने पर ठीक उसी तरह लाल रंग की सर्पिल रेखा के साथ अंडरलाइन किया जाता है, जैसे कि अंग्रेजी में।

कैसे करें उपयोग?

इस सुविधा को सक्रिय करना भी बहुत आसान है। अगर आपके पास माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस के ताजा वर्जन (ऑफिस 2016 और ऑफिस 365) है, तो आप बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के माइक्रोसॉफ्ट के प्रूफिंग टूल डाउनलोड करके वर्तनी की जांच कर सकते हैं। माइक्रोसॉफ्ट वर्ड में भाषायी सुविधाओं को सक्रिय करने के लिए ऊपर दिखने वाले रिबन में रिव्यू नामक मेन्यू आइटम पर क्लिक करें। यहां आपको लैंग्वेज नामक मेन्यू और आइकन दिखेगा। इसे क्लिक करने पर लैंग्वेज प्रिफरेंस नामक मेन्यू लिंक दबाएं। अब खुलने वाले डायलॉग बॉक्स में Choose Editing Languages नामक खाने के नीचे एड एडिशनल एडिटिंग लैंग्वेज लिखा बॉक्स दिखेगा। यहां क्लिक करके दिखने वाली भाषाओं की सूची में हिंदी को चुनें और एड बटन दबाएं। अब उस भाषा का नाम ऊपर दिए बॉक्स में दिखने लगेगा। लेकिन वहां नॉट इंस्टॉल्ड लिंक दिखाई देगा, जिसे क्लिक करने पर आपके ब्राउजर में माइक्रोसॉफ्ट की वेबसाइट खुलेगी, जहां से हिंदी भाषा में प्रूफिंग टूल्स को डाउनलोड किया जा सकता है। अब Choose Editing Languages में हिंदी को डिफॉल्ड भाषा बना दें और ओके बटन दबाएं। माइक्रोसॉफ्ट वर्ड को रिस्टार्ट करें। अगली बार वर्ड, पावरप्वाइंट और दूसरे ऑफिस एप्लिकेशंस में वर्तनी की जांच होने लगेगी, ठीक उसी तरह जैसे अंग्रेजी में स्पेलिंग चेक होती है। माउस को राइट क्लिक करके थिसॉरस और वर्ड लुकअप जैसे विकल्प भी आजमा कर देखें।

संकलनकर्ता
हर्ष शर्मा
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस.)

आतंकवाद

मुर्दे चलते है हाथों में मशाल लिए
और जलते है जिस्म जिंदा यहाँ

मिटाते है अपने ही हाथों बस्ती
घर को जलाते है घर के ही चिराग यहाँ

इंसानियत तो जला चुके कब की
अब तो जलाते है सिर्फ इंसान यहाँ

तब मरे थे उनकी गिरफ्त से होने को आजाद
अब अपनों से अपनी आजादी की तमन्ना यहाँ

न जला अपनी रूह, न जला बदन अपना
जला दे वो शैतान जो जला रहा है जहाँ तेरा।।

दिव्या शर्मा
सहायक महानिदेशक (टी)

दिले नादान

दिले नादान तुझे,
हुआ क्या है।
कभी बच्चों सा,
मासूम लगता है।
कभी मयूर सा,
नाचने लगता है।
कभी अश्व सा,
भागने लगता है।
कभी पंछियों सा,
उड़ने लगता है।
कभी मोम सा,
पिघलने लगता है।
कभी मोतियों सा,
बिखरने लगता है।

कभी ज्वाला सा,
दहकने लगता है।
कभी हिरण–सा चंचल,
मचलने लगता है।
कभी सावन में,
रोमानी हो जाता है।
उदासी में दिल,
टूटा टूटा लगता है।
मायूसी में दिल,
बैठने लगता है।
उत्साहित होता हूँ,
तो तरंगित होने लगता है।
कभी गरूर में,
डूबने लगता है।

मोहब्बत में ये,
फना होने लगता है।
खुदा की ईबादत में,
लीन होने लगता है।
दिल कभी पागल,
आवारा, अनाड़ी लगता है।
दिले नादान तुझे,
हुआ क्या है।
इतने मिजाज बदलता है,
आखिर माजरा क्या है।

श्रीमती सुमित्रा जाखड़
धर्मपत्नी श्री हवा सिंह जाखड़
निदेशक, (एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

हिंदी ई–टूल्स का प्रयोग

यूनिकोड प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नम्बर प्रदान करता है, चाहे कोई भी प्लेटफॉर्म हो, चाहे कोई भी प्रोग्राम हो, चाहे कोई भी भाषा हो।

- यूनीकोड मानक में विश्व की लेखनीबद्ध भाषाओं के लिए सब करैक्टरों के इनकोड करने की क्षमता है।
- यूनीकोड 21–बिट इनकोडिंग का प्रयोग करता है जो 20 लाख करैक्टरों से भी ज्यादा (2097152) के कोड प्वाइंट उपलब्ध कराते हैं।
- यूनीकोड स्टैंडर्ड प्रत्येक करैक्टर को एक विलक्षण संख्यात्मक मान और नाम देते है।
- यूनिकोड एनकोडिंग अंतर्राष्ट्रीय मानक ISO/IEC 10646 है।
- भारतीय भाषाओं के लिए Unicode Encoding के लिए UTF-8 का प्रयोग होता है।

युनिकोड मानक सार्विक करैक्टर इनकोडिंग मानक है जिसका प्रयोग कंप्यूटर प्रोसेसिंग के लिए टेक्स्ट के निरूपण के लिए किया जाता है। कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प कैरेक्टर इनकोडिंग के लिए युनिकोड है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100% कार्य किया जा सकता है, कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे– वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई–मेल, वैबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं। हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान–प्रदान तथा हिंदी की–वर्ड पर गुगल या किसी अन्य सर्च इंजन पर सर्च कर सकते हैं।

यूनिकोड एनकोडिंग को install/use करना बहुत आसान है। इसकी जानकारी राजभाषा विभाग की साइट (http://hindietools.nic.in) पर भी उपलब्ध है।

कंप्यूटरों में हिंदी में कार्य करने के लिए 3 की–बोर्ड विकल्प हैं:–

- इंस्क्रिप्ट
- रेमिंग्टन
- फोनेटिक

The latest electronic version of the Unicode Standard can be found at यूनिकोड साइट (www.unicode.org). यूनिकोड कंसोर्शियम के प्रकाशनों में यूनिकोड मानक के साथ इसके अनुलग्नक और वर्ण शामिल हैं http://www.unicode.org/ucd/

भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास www.ildc.in

भाषा तकनीकी में विकसित उपकरणों को जनसामान्य तक पहुँचाने हेतु भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रावधान के अंतर्गत www.ildc.gov-in तथा www.ildc.in वेबसाइटों के द्वारा व्यवस्था की गई है।

इन उपकरणों एवं सेवाओं में मुख्य हैं–

फॉन्ट, कोड परिवर्तक, वर्तनी संशोधक, ओपन ऑफिस, मैसेंजर, ई–मेल क्लायंट, ओ सी आर, शब्दकोश, ब्राउजर, ट्रांसलिटरेशन, कॉर्पोरा, शब्द–संसाधक

की–बोर्ड विकल्प/सक्रिय कैसे करें?

इंस्क्रिप्ट Inscript की–बोर्ड ले–आउट

इंस्क्रिप्ट में टंकण सीखना बहुत आसान है। इंस्क्रिप्ट ले–आउट भारत सरकार का मानक होने की वजह से सभी ऑपरेटिंग सिस्टम में डिफाल्ट में, यानि पहले से मौजूद रहता है। साथ ही किसी भी एक भाषा में इंस्क्रिप्ट की–बोर्ड सीखने पर, सभी भारतीय भाषाओं में आसानी से टंकण कर सकते हैं ।

विंडोज आधारित कंप्यूटरों में सक्रिय करने के लिए

Go to Start>Control Panel > Regional & Language Options >Click on Keyboard and Languages Tab > Click on Change Keyboards > Add Devnagari – INSCRIPT keyboard layout for Hindi

Setting for Windows 8.1 and Windows 10

Install Phonetic or Remington or Inscript Keyboard layout as per your requirement in Windows 8.1 or Windows 10

After Installation

Control Panel >> Language >> Advance Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

Inscript Typing Tutor डाउनलोड करने के लिए http://ildc.in इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय।

Inscript Typing Tool डाउनलोड करने के लिए http://ildc.in इलेक्ट्रानिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय।

फोनेटिक/रोमन की–बोर्ड

फोनेटिक की–बोर्ड में, हिंदी टंकण से अनभिज्ञ अधिकारी, रोमन स्क्रिप्ट का उपयोग करते हुए, हिंदी में आसानी से टंकण कर सकते हैं

विंडोज आधारित कंप्यूटरों के लिए डाउनलोड लिंक

http://bhashaindia.com/Downloads/Pages/newpage.aspx - **Microsoft Tool**

https://www.google.com/inputtools/windows/-

Google Tool

Setting for Windows 8.1 and Windows 10

Install Phonetic or Remington or Inscript Keyboard layout as per your requirement in Windows 8.1 or Windows 10

After Installation

Control Panel >> Language >> Advance Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

रेमिंग्टन की–बोर्ड ले–आउट

रेमिंग्टन की–बोर्ड पूर्व से प्रचलित मैनुअल टाइपराइटर की तरह काम करता है।

विंडोज आधारित कंप्यूटरों के लिए डाउनलोड लिंक

http://bhashaindia.com साइट से Indic Input 3 (32 bit तथा 64 bit OS) के लिए डाउनलोड किया जा सकता है।

Setting for Windows 8.1 and Windows 10

Install Phonetic or Remington or Inscript Keyboard layout as per your requirement in Windows 8.1 or Windows 10

After Installation

Control Panel >> Language >> Advance Setting

Tick the Check Boxes

- Let me set a different input method for each app windows
- Use the desktop Language bar when it is available and Save

मोबाइल एप्प

एंड्रॉयड फोन

Android based मोबाइल तथा टैबलेट में अनुवाद सॉफ्टवेयर

- Play Store में जाकर Google Translate डाउनलोड करके इंस्टाल करें।
- इससे आप अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद कर सकते हैं तथा अंग्रेजी में प्राप्त SMS को हिंदी में भी पढ़ सकते हैं।
- JPG Format picture में यदि कोई अंग्रेजी टैक्सट हो तो उसे Capture करके हिंदी अनुवाद कर सकते हैं।
- किसी अंग्रेजी में छपे हुए टैक्सट को text में कनवर्ट करके हिंदी में अनुवाद कर सकते हैं।

Google Docs पर कार्य करना

- Play Store से Google Docs डाउनलोड करके इंस्टाल

करें। मोबाइल फोन में Google Docs पर कार्य तथा कंप्यूटर में एक ही गूगल account होने पर Google Docs में फाइलें एक समान ही रहेंगी। फाइलों पर कार्य आप मोबाइल तथा कंप्यूटर पर आसानी से कर सकेंगे।

मोबाइल फोन पर हिंदी टाइपिंग के लिए

1. Play Store में जाकर Google Indic Keyboard डाउनलोड करके इंस्टाल करें।
2. Setting >> Language and Input में जाकर Keyboard & Input Method में से Current Keyboard or Default Keyboard में से English & Indic Languages Google Indic Keyboard को चुनें।

गूगल वाइस टाइपिंग सेटिंग

1. Setting >> Language and Input Option में से Google Voice Typing विकल्प का चयन करें।
2. Language: हिंदी (भारत) का चयन करें। एक समय पर एक ही भाषा का चयन कर सकते हैं।
3. Offilene Speech Recognition का भी चयन करें। All पर क्लिक करके हिंदी (भारत) को Download करें।

   यदि मोबाइल फोन में Android 7.0 OS है तो Setting >> Language and Input >> Virtual Keyboard के अंतर्गत Google Voice Typing विकल्प को चुनें।
4. जब भी टाइप करना हो की–बार्ड पर उपलब्ध माइक्रोफोन के बटन पर क्लिक करें और सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें, इससे आप SMS, WhatsApp, E-mail, Google Docs आदि पर वाइस टाइपिंग कर सकेंगे

Play Store से हिंदी Hindi Free Apps

Play Store से Hindi Grammar, Hindi Alphabet, English -Hindi Dictionary, Learn Hindi Speak, Hindi Keyboard, Learn Hindi Step by Step, Muhavare: Hindi Idioms डाउनलोड कर सकते हैं।

विंडोज फोन

Windows based मोबाइल तथा टैबलेट में अनुवाद सॉफ्टवेयर

- Apps Store में जाकर Google Translate डाउनलोड करके इंस्टाल करें।
- इससे आप अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद कर सकते हैं तथा अंग्रेजी में प्राप्त SMS को हिंदी में भी पढ़ सकते हैं।
- JPG Format picture में यदि कोई अंग्रेजी टैक्सट हो तो उसे Capture करके हिंदी अनुवाद कर सकते हैं।
- किसी अंग्रेजी में छपे हुए टैक्सट को text में कनवर्ट करके हिंदी में अनुवाद कर सकते हैं।

Google Docs पर कार्य करना

- Apps Store से Google Docs डाउनलोड करके इंस्टाल करें। मोबाइल फोन में Google Docs पर कार्य तथा कंप्यूटर में एक ही गूगल account होने पर Google Docs में फाइलें एक समान ही रहेंगी। फाइलों पर कार्य आप मोबाइल तथा कंप्यूटर पर आसानी से कर सकेंगे।

मोबाइल फोन पर टाइपिंग के लिए

1. http://bhashaindia.com/pages/windows10.aspx में जाकर Phonetic Keyboard डाउनलोड करके इंस्टाल करें।

Apps Store ें Hindi Grammar, Hindi Alphabet, English Hindi Dictionary, Learn Hindi Speak, Hindi Keyboard, Learn Hindi Step by Step, Muhavare: Hindi Idioms डाउनलोड कर सकते हैं।

आईओएस iPhone/iPad

How to Type in Hindi easily with Transliteration Keyboard in iPhone / iPad

- Go to **Settings** App
- Under Settings Select **General**
- Tap on **Keyboard** in General Settings
- Select **Add New Keyboard**... under Keyboards

- Select **Hindi** in Add New Keyboard...
- Under Hindi a new Keyboard **Transliteration** is added. Select it.
- Tap on Done at top right corner.

हिंदी फॉन्ट कनवर्टर

Hindi Font Converter (Non Unicode Font to Unicode and Vice versa)

Font Converter की सहायता से आप हिन्दी के लगभग सभी popular fonts को Unicode में और यूनीकोड से अन्य हिन्दी फॉन्ट में आसानी से परिवर्तन कर सकते हैं।

http://bhashaindia.com साइट पर Download पर क्लिक करके

TBIL Converter 32 - bit 4.1

TBIL Converter 64 - bit 4.1

डाउनलोड कर सकते हैं।

गूगल वाइस टाइपिंग

अपनी आवाज के साथ टाइप करें, आप एक आसान तरीका से दस्तावेज में अपनी आवाज के साथ टाइप कर सकते हैं।

फिलहाल, यह सुविधा क्रोम ब्राउजर में ही उपलब्ध है।

सबसे पहले यह सुनिश्चित करें कि आपके कंप्यूटर से एक माइक्रोफोन जुड़ा हुआ है और वह काम करता है तथा एक जी–मेल का यूजर आईडी–पासवर्ड होना जरूरी है ।

1. Chrome ब्राउजर में http://docs.google.com ओपन करें। जी–मेल आईडी से लोगिन करें
2. गूगल डॉक्स में एक नया दस्तावेज खोलें ।
3. उपकरण (Tools) मेनू > वॉइस टाइपिंग (Voice Typing) पर क्लिक करें। पॉप–अप माइक्रोफोन बॉक्स से भाषा (हिंदी) का चयन करे।
4. आप पाठ में बोलने के लिए तैयार हैं, तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें ।
5. सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें ।
6. रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुनः क्लिक करें।

वॉइस टाइपिंग की गलतियों में सुधार

आवाज के साथ टाइप करते हुए अगर गलती हो जाए तो गलती पर कर्सर ले जाकर और माइक्रोफोन से पुनः बोल कर ठीक कर सकते हैं। गलती सुधारने के बाद, आप आवाज टाइपिंग जारी रखना चाहते हैं, वहां कर्सर वापस ले जाए।

संकलनकर्ता
अमर दीप
कनिष्ठ अनुवादक
स्त्रोत : राजभाषा विभाग की वेबसाइट

गज़ल

अल्फाजे इश्क ये झूठी है, प्यार झूठा है
दगा ने जीती है बाजी, वफा को लूटा है।

मुर्दों की हँसी पर फिदा है जिंदे दिल
हवस के चेहरे पर वफा का नकाब झूठा है।

जिंदा है अगर दिल तो जिदंगी मुश्किल
जीयो वह जो हकीकत है, ख्वाब झुठा है।

मुर्दों के इस शहर में जिंदा किसको कहें
सवाल यह हकीक़त है, जवाब झूठा है।

हुस्न की गलियों में यारो पाँव न रखना
यह सच है कि हुस्न का शवाब झूठा है।

मनोरंजन
सहायक महानिदेशक
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

युवा शक्ति के प्रतीक – स्वामी विवेकानंद

उन्नीसवीं शताब्दी में विदेशी शासन की दासता से दुखी और शोषित हो रही भारतीय जनता को जिन महापुरुषों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रोत्साहित किया उनमें, स्वामी विवेकानंद जी प्रमुख थे। अपनी ओजस्वी वाणी से उन्होंने जन–मानस के मन में स्वतंत्रता का शंखनाद किया। अपनी मातृभूमि के प्रति उनके मन में अत्यधिक सम्मान था। भारत माता की गुलामी और उसके तिरस्कार को देखकर स्वामी जी का मन व्याकुल हो जाता था। उनके मन में राष्ट्रप्रेम कूट–कूट कर भरा था। मद्रास के अनेक युवा शिष्यों को उन्होंने लिखा था कि, "भारत माता हजारों युवकों की बली चाहती है। याद रखो, मनुष्य चाहिए पशु नही।"

देश को सम्पन्न बनाने के लिए पैसे से ज्यादा हौसले की, ईमानदारी की और प्रोत्साहन की जरूरत होती है। स्वामी जी के अमृत वचन आज भी देशवासियों को प्रोत्साहित करते हैं। उनमें चिंतन और सेवा का संगम था। विवेकानंद जी ने भारतीय चिंतन से विदेशों में भारत का सम्मान बढाया। भारत माता के प्रति उनके मन में अपार श्रद्धा थी। जब वे 1896 में विदेश से भारत लौटे तो, जैसे ही जहाज किनारे लगा दौडकर भारत भूमि को साष्टांग प्रणाम किया और रेत में इस प्रकार लोटने लगे कि जैसे वर्षों बाद कोई बच्चा अपनी माता की गोद में पहुँचा हो।

आज हमारा देश स्वतंत्र होने के बावजूद अनगिनत समस्याओं से जूझ रहा है। बेकारी, गरीबी, शिक्षा, प्रदुषण एवं अन्न–जल तथा मँहगाई की समस्या से देश की जनता प्रभावित है। ऐसी विपरीत परिस्थिति में भी स्वामी विवेकानंद जी को विश्वास था कि, हमारा देश उठेगा, ऊपर उठेगा और इसी जनता के बीच में से ऊपर उठेगा। स्वामी जी प्रबल राष्ट्रभक्त थे। वे देश की स्वाधीनता के कट्टर समर्थक थे। उन्हें कायरता से नफरत थी, उनका कहना था कायरता छोड़ो, निद्रा त्यागो। स्वाधीनता शक्ति द्वारा प्राप्त करो। वे राष्ट्र उत्थान के प्रबल समर्थक थे। उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था भारत का विकास। स्वामी जी कहते थे कि ये जननी जन्मभूमि भारत माता ही हमारी मातृभूमि है। हमें भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए। स्वामी जी के संदेश युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं, उन्होंने युवाओं को संदेश दिया कि,

"हे भाग्यशाली युवा, अपने महान कर्तव्य को पहचानो। इस अद्‌भुत सौभाग्य को महसूस करो। इस रोमांच को स्वीकार करो। ईश्वर तुम्हें कृपा दृष्टि के साथ देखता है और वह तुम्हारी सहायता और मार्गदर्शन के लिए सदैव तत्पर है। मैं तुम्हारे महान बनने की कामना करता हूँ। विश्व ने अपना विश्वास तुम्हारे ऊपर जताया है। तुम्हारे बड़े तुमसे उम्मीद रखते हैं। तो युवा का अर्थ है स्वंय में दृढ़ विश्वास रखना, अपने आशावादी निश्चय तथा संकल्प का अभ्यास करना और स्वसंस्कृति के इस सुंदर कार्य में अच्छे इरादों की इच्छा रखना। यह न केवल तुम्हें बल्कि तुमसे जुड़े सभी लोगों को संतुष्टि और पूर्णता देगा। वास्तव में अपने जीवन को आकार देना तुम्हारे हाथ में है। सद्‌गुण का अभ्यास करो, सद्‌गुणों के प्रति दृढ़ रहो। सद्‌गुण खुद में स्थापित करो। सद्‌गुणों की प्रभावशाली आभा बनो और अच्छाई का अनुसरण करो। युवा इस भव्य प्रक्रिया के लिए बना है। युवा

जीवन इन प्रक्रियाओं का सक्रिय विकास और सम्पादन है। तुम्हारा यह समय जीवन की इस अति महत्वपूर्ण और अतिआवश्यक प्रक्रिया के लिए उपयुक्त और अनुकूल कार्यक्षेत्र मुहैया करवाता है। यह युवा जीवन का विशिष्ट, अतिमहत्वपूर्ण और उच्चतम मूल्य है। यह महान व्यक्तित्व की रचना का अभिप्राय बतलाता है। यह आत्म–विकास एवं आत्म–निर्माण है। "सफल जीवन" शब्द का सही आशय जानने का प्रयास करो। जब तुम जीवन के संदर्भ में सफल होने की बात करते हो तो इसका मतलब मात्र उन कार्यों में सफल होना नहीं जिसे तुमने पूरा करने का बीड़ा उठाया था या उठाया है। इसका अर्थ सभी आवश्यकताओं या इच्छाओं की पूर्ति कर लेना भर नही है। इसका तात्पर्य सिर्फ नाम कमाना या पद प्राप्त करना या आधुनिक दिखने के लिए फैशनेबल तरीकों की नकल करना या अप–टू–डेट होना नहीं है।

सच्ची सफलता का सार यह है कि तुम स्वंय को कैसा बनाते हो। यह जीवन का आचरण है, जिसे तुम विकसित करते हो। यह चरित्र है, जिसका तुम पोषण करते हो और जिस तरह का व्यक्ति तुम बनते हो। यह सफल जीवन का मूल अर्थ है। इसलिए तुम पाओगे कि महत्वपूर्ण मसला सिर्फ जिंदगी में सफलता से जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि जीवन की सफलता से संबन्धित है। ऐसा सफल जीवन वह है, जो एक आर्दश महान व्यक्ति बनाने में कामयाब रहे। तुम्हारी सफलता का आकलन इससे नहीं है कि तुमने क्या पाया, बल्कि इससे है कि तुम क्या बने, कैसे जिए और तुमने क्या किया।"

स्वामी विवेकानंद जी के जन्मदिन को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने अपने युवाकाल में ही भारत के गौरव को पूरे विश्व में गौरवान्वित किया। स्वामी विवेकानंद जी ने हीनता से ग्रस्त भारत देश को ये अनुभव कराया कि इस देश की संस्कृति अब भी अपनी श्रेष्ठता में अद्वितीय है। स्वामी जी ने देशवासियों के अंर्तमन में जीवन प्राण फूंका। उन्होंने कहा–

"हे अमृत के अधिकारीगण! तुम तो ईश्वर की संतान हो, अमर आनंद के भागीदारी हो, पवित्र और पूर्ण आत्मा हो, तुम इस मर्त्यभूमि पर देवता हो। उठो! आओ! ऐ सिंहों! इस मिथ्या भ्रम को झटककर दूर फेंक दो कि तुम भेंड़ हो। तुम जरा–मरणरहित नित्यानंदमय आत्मा हो।"

स्वामी विवेकानंद अत्यन्त विद्वान पुरुष थे। एक बार अमेरीकी प्रोफेसर राइट ने कहा था कि, "हमारे यहाँ जितने भी विद्वान हैं, उन सबके ज्ञान को यदि एकत्र कर लिया जाए तो भी स्वामी विवेकानंद के ज्ञान से कम होगा।"

स्वामी विवेकानंद भारत के महान सपूत, देशभक्त, समाज–सुधारक और तेजस्वी संन्यासी थे। स्वामी विवेकानंद जी की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने का प्रयास करते हुए, उनको शत–शत् नमन करना हमारी सांस्कृतिक गरिमा की पहचान है।

संकलनकर्ता
राजेश त्रिपाठी
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस)

मिल गयी ज़िन्दगी

मिल गयी जिंदगी
मुझको मेरी कहीं
बहुत देर से
पर मिली तो सही
खो गयी थी मुझसे
न जाने कहाँ

देखकर मैं अब उसे हैरान हूँ
न जाने कहूँ, अब मैं उससे क्या
सोच कर यही परेशान हूँ

पूछती है मुझसे
कहीं मैं तो नहीं,
ढुढ़ते थे जिसे
हर समय हर घड़ी?

कर लो पूरी
गर हो हसरत कोई
तुम्हारी जिंदगी
तुम्हारे रूबरू खड़ी।
मिल गई....

ज़िन्दगी क्या है

जिंदगी है मंजिल या सिर्फ रास्ता !
अगर मंजिल, तो मिली नहीं
अगर रास्ता, तो सही नहीं !!

जिंदगी है खुशी या सिर्फ गम !
अगर खुशी तो मिली नहीं
अगर गम, तो सही नहीं !!

जिंदगी है आराम या सिर्फ काम !
अगर आराम, तो मिली नहीं
अगर सिर्फ काम, तो सही नहीं !!

अवधेश सिंह
सहायक महानिदेशक (एफ.ए.)

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनों से रेंगते – रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ।
काला टीका दूध मलाई
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ हर जगह
प्यार ये तेरा कैसा है।

सीधा–साधा, भोला–भाला
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा
''माँ''! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

संकलनकर्ता
ईश्वर सिंह
एम.टी.एस. (दस्तावेज)

बुंदेलखंड

कालिंजर के राजा परमार के आश्रय में जगनिक नाम के एक कवि थे, जिन्होंने महोबे के दो प्रसिद्ध वीरों–आल्हा और ऊदल (उदयसिंह) – के वीरचरित का विस्तृत वर्णन एक वीरगीतात्मक काव्य के रूप में लिखा था जो इतना सर्वप्रिय हुआ कि उसके वीरगीतों का प्रचार क्रमशः सारे उत्तरी भारत में विशेषतः उन सब प्रदेशों में जो कन्नौज साम्राज्य के अंतर्गत थे, हो गया। जगनिक के काव्य का कहीं पता नहीं है पर उसके आधार पर प्रचलित गीत हिंदी भाषाभाषी प्रांतों के गांव–गांव में सुनाई देते हैं। ये गीत 'आल्हा' के नाम से प्रसिद्ध हैं और बरसात में गाये जाते हैं। गावों में जाकर देखिये तो मेघगर्जन के बीच किसी अल्हैत के ढोल के गंभीर घोष के साथ यह हुंकार सुनाई देगी–

बारह बरिस लै कूकर जीऐं, औ तेरह लौ जिऐं सियार,

बरिस अठारह छत्री जिऐं, आगे जीवन को धिक्कार।

इस प्रकार साहित्यिक रूप में न रहने पर भी जनता के कंठ में जगनिक के संगीत की वीरदर्पपूर्ण प्रतिध्वनि अनेक बल खाती हुई अब तक चली आ रही है। आल्हा का प्रचार यों तो सारे उत्तर भारत में है पर बैसवाड़ा इसका केन्द्र माना जाता है, वहाँ इसे गाने वाले बहुत अधिक मिलते हैं। बुंदेलखंड में – विशेषतः महोबा के आसपास भी इसका चलन बहुत है। आल्हा गाने वाले लोग अल्हैत कहलाते हैं।

इन गीतों के समुच्चय को सर्वसाधारण 'आल्हाखंड' कहते हैं जिससे अनुमान मिलता है कि आल्हा संबंधी ये वीरगीत जगनिक के रचे उस काव्य के एक खंड के अंतर्गत थे जो चंदेलों की वीरता के वर्णन में लिखा गया होगा। आल्हा और उदल परमार के सामंत थे और बनाफर शाखा के छत्रिय थे। इन गीतों का एक संग्रह 'आल्हाखंड' के नाम से छपा है। फर्रुखाबाद के तत्कालीन कलेक्टर मि.चार्ल्स इलियट ने पहले पहल इनगीतों का संग्रह करके छपवाया था।

आल्हाखंड में तमाम लड़ाइयों का जिक्र है। शुरूआत मांडो की लड़ाई से है। मांडो के राजा करिंगा ने आल्हा–उदल के पिता जच्छराज–बच्छराज को मरवा कर उनकी खोपड़ियां कोल्हू में पिरवा दी थी। उदल को जब यह बात पता चली तब उन्होंने अपने पिता की मौत का बदला लिया तब उनकी उम्र मात्र 12 वर्ष थी।

आल्हाखंड में युद्ध में लड़ते हुये मर जाने को लगभग हर लड़ाई में महिमामंडित किया गया है:–

मुर्चन–मुर्चन नचै बेंदुला,उदल कहैं पुकारि–पुकारि,
भागि न जैयो कोऊ मोहरा ते यारों रखियो धर्म हमार।
खटिया परिके जौ मरि जैहौ, बुढ़ि है सात साख को नाम
रन मा मरिके जौ मरि जैहौ, होइ है जुगन–जुगन लौं नाम।

स्वामी तथा मित्र के लिये कुर्बानी दे देना सहज गुण बताये गये हैं:–
जहां पसीना गिरै तुम्हारा तंह दै देऊं रक्त की धार।

आज्ञाकारिता तथा बड़े भाई का सम्मान करना का कई जगह बखान किया गया है। एक बार मेले में आल्हा के पुत्र इंदल का अपहरण हो जाता है। इंदल मेले में उदल के साथ गये थे। आल्हा ने गुस्से में उदल की बहुत पिटाई की:–

हरे बांस आल्हा मंगवाये औ उदल को मारन लाग।

ऊदल चुपचाप मार खाते – बिना प्रतिरोध के। तब आल्हा की पत्नी ने आल्हा को रोकते हुये कहा:–

हम तुम रहिबे जौ दुनिया में इंदल फेरि मिलैंगे आय

कोख को भाई तुम मारत हौ ऐसी तुम्हहिं मुनासिब नाय।

यद्यपि आल्हा में वीरता तथा अन्य तमाम बातों का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है तथापि मौखिक परम्परा के महाकाव्य आल्हाखण्ड का वैशिष्ट्य बुन्देली का अपना है। महोवा 12वीं शती तक कला केन्द्र तो रहा है जिसकी चर्चा इस प्रबन्ध काव्य में है। इसकी प्रामाणिकता के लिए न तो अन्तः साक्ष्य ही उपादेय और न बर्हिसाक्ष्य। इतिहास में परमार्देदेव की कथा कुछ दूसरे ही रुप में है परन्तु आल्हाखण्ड का राजा परमाल एक वैभवशाली राजा है, आल्हा और ऊदल उसके सामन्त है। यह प्रबन्ध काव्य समस्त कमजोरियों के बावजूद बुन्देलों जन सामान्य की नीति और कर्तव्य का पाठ सिखाता है। बुन्देलखण्ड के प्रत्येक गांवों में घनघोर वर्षा के दिन आल्हा जमता है।

भरी दुपहरी सरवन गाइये, सोरठ गाइये आधी रात।

आल्हा पवाड़ा वादिन गाइये, जा दिन झड़ी लगे दिन रात।।

आल्हा भले ही मौखिक परम्परा से आया है, पर बुन्देली संस्कृति और बोली का प्रथम महाकाव्य है, जगनिक इसके रचयिता है। भाषा काव्य में बुन्देली बोली का उत्तम महाकाव्य स्वीकार किया जाना चाहिए। बुन्देली बोली और उसके साहित्य का समृद्ध इतिहास है और भाषा काव्यकाल में उसकी कोई भी लिखित कृति उपलब्ध नहीं है।

विवेक कृष्ण वर्मा
कनिष्ठ दूर संचार अधिकारी
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में दिनांक 15 से 29 सितंबर, 2016 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ 15.09.2016 को प्रातः 11:00 बजे श्री देबी प्रसाद डे, वरिष्ठ उप महानिदेशक, टी.ई.सी. द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को श्री देबी प्रसाद डे द्वारा माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह का संदेश पढ़कर सुनाया गया ।

पखवाड़े के दौरान कुल 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया ।

पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 29.09.2016 को श्री देबी प्रसाद डे वरिष्ठ उप महानिदेशक (टी.ई.सी.) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सभी विजेताओं को पुरस्कार राशि एवं प्रशस्ति पत्र दिये गए। इस मौके पर उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी भाषा में अधिक से अधिक कामकाज और पत्राचार करने का आह्वान किया। अंत में श्री सुनील पुरोहित, उप महानिदेशक (एन.जी.एस.) द्वारा सभी को धन्यवाद देते हुए पखवाड़े का समापन किया गया ।

क्र. सं	प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार विजेता का नाम	प्राप्त स्थान
1	श्रुतलेख	श्री राम संवार	प्रथम पुरस्कार
2		श्री चितरंजन कुमार	द्वितीय पुरस्कार
3		श्री मान सिंह	तृतीय पुरस्कार
4		श्री सभाजीत मिश्र	सांत्वना पुरस्कार
5		श्री कल्प नाथ साह	सांत्वना पुरस्कार
6		श्री ईश्वर सिंह	सांत्वना पुरस्कार
7	निबंध (राजपत्रित अधिकारियों के लिये)	श्री अवधेश सिंह	प्रथम पुरस्कार
8		श्री मनीष रंजन	द्वितीय पुरस्कार
9		श्री राजमोहन मीना	तीसरा पुरस्कार
10		श्री ए.के. सिंह	सांत्वना पुरस्कार
11		श्री केतन कुमार मेहता	सांत्वना पुरस्कार
12		श्री शत्रुघ्न प्रसाद साहु	सांत्वना पुरस्कार
13	निबंध (अराजपत्रित कर्मचरियों के लिये)	श्री शिव चरण	प्रथम पुरस्कार
14		श्री राजेश कुमार मीना	द्वितीय पुरस्कार
15		श्री निर्भय कुमार मिश्रा	तीसरा पुरस्कार
16		श्री चितरंजन कुमार	सांत्वना पुरस्कार
17		श्रीमती नूपुर शर्मा	सांत्वना पुरस्कार
18		श्री ईश्वर सिंह	सांत्वना पुरस्कार
19		श्री नागेन्द्र लाल कर्ण	सांत्वना पुरस्कार

20	हिंदी टिप्पण / मसौदा लेखन	श्री अमर दीप	प्रथम पुरस्कार
21		श्री उत्तम चंद मीना	द्वितीय पुरस्कार
22		श्री राजमोहन मीना	तीसरा पुरस्कार
23		श्री केतन कुमार मेहता	सांत्वना पुरस्कार
24		सुश्री दिव्या शर्मा	सांत्वना पुरस्कार
25		श्री के.पी. सिंह	सांत्वना पुरस्कार
26	हिंदी व्याकरण ज्ञान	सुश्री दिव्या शर्मा	प्रथम पुरस्कार
27		श्री राजमोहन मीना	द्वितीय पुरस्कार
28		श्री मनीष रंजन	तीसरा पुरस्कार
29		श्री अमर दीप	सांत्वना पुरस्कार
30		श्री अवधेश सिंह	सांत्वना पुरस्कार
31		श्री हर्ष शर्मा	सांत्वना पुरस्कार
32		श्री राजेश त्रिपाठी	सांत्वना पुरस्कार
33	अनुवाद	श्री हर्ष शर्मा	प्रथम पुरस्कार
34		श्री मनीष रंजन	द्वितीय पुरस्कार
35		श्री राजमोहन मीना	तीसरा पुरस्कार
36		सुश्री दिव्या शर्मा	सांत्वना पुरस्कार
37		श्री रोहित गुप्ता	सांत्वना पुरस्कार
38		श्री शत्रुघ्न प्रसाद साहु	सांत्वना पुरस्कार
39	अंताक्षरी	श्री शिव चरण	प्रथम पुरस्कार
40		श्री सभाजीत मिश्र	प्रथम पुरस्कार
41		श्री चितरंजन कुमार	द्वितीय पुरस्कार
42		श्री कल्पनाथ साह	द्वितीय पुरस्कार
43		श्री राजेश कुमार मीना	तीसरा पुरस्कार
44		श्री मनीष रंजन	सांत्वना पुरस्कार
45		श्रीमती उषा कुमारी	सांत्वना पुरस्कार
46		श्री एस.के. सिंह	सांत्वना पुरस्कार
47	हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिये	श्री किशन पाल सिंह	प्रथम पुरस्कार
48		श्री रोहित गुप्ता	द्वितीय पुरस्कार
49		श्री राजेश कुमार	तीसरा पुरस्कार
50	स्वरचित मौलिक कविता लेखन	श्री राजेश कुमार मीना	प्रथम पुरस्कार
51		श्री निर्भय कुमार मिश्रा	द्वितीय पुरस्कार
52		श्री मनीष रंजन	तीसरा पुरस्कार
53		श्री चितरंजन कुमार	सांत्वना पुरस्कार
54		श्री शत्रुघ्न प्रसाद साहु	सांत्वना पुरस्कार
55		श्री केतन कुमार मेहता	सांत्वना पुरस्कार

बधाईयां

हिन्दी पखवाड़ा 2016

बधाईयां

हिन्दी पखवाड़ा 2016

एक झलक

हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियागिताएं

एक झलक

हिन्दी कार्यशालाएं

क्षेत्रीय दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र (पश्चिमी क्षेत्र) मुंबई

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी, दिनांक 14 सितंबर 2016 से 29 सितंबर 2016 तक इस कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इन कार्यक्रमों में अधिकतम संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

इस दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया:

क. निबंध प्रतियोगिता
ख. शुद्धलेखन प्रतियोगिता
ग. समानार्थी शब्द प्रतियोगिता
घ. कथावाचन/काव्यवाचन प्रतियोगिता
च. सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता
छ. अंताक्षरी प्रतियोगिता

प्रतियोगिताओं के विजेताओं का विवरण इस प्रकार है:

प्रतियोगिता का नाम	प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
निबंध प्रतियोगिता	चेतना सुडकू (बी.एस.एन.एल)	राजमान यादव (बी.एस.एन.एल)	स.जगताप(टी.ई.सी)
शुद्ध लेखन प्रतियोगिता	विदया पाटील (बी.एस.एन.एल)	स.जगताप(टी.ई.सी)	कल्पना चिंतल(टी.ई.सी)
समानार्थी शब्द प्रतियोगिता	विदया पाटील (बी.एस.एन.एल)	श्रद्धा तुळसणकर, सोनवणे आर.पी. (बी.एस.एन.एल)	माधुरी कुलकर्णी (बी.एस.एन.एल)
कथावाचन/काव्यवाचन प्रतियोगिता	स.जगताप (टी.ई.सी)	आर.बी. सदानंदे (टी.ई.सी) रामदास आडके (बी.एस.एन.एल)	ज्योती खरे (बी.एस.एन.एल)
सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता	स.जगताप (टी.ई.सी)	राजेश श्रीवास्तव (बी.एस.एन.एल)	माधुरी कुलकर्णी, सोनवणे आर.पी. (बी.एस.एन.एल)
अंताक्षरी प्रतियोगिता	ग्रुप (अ) ज्योति खरे (बी.एस.एन.एल)	ग्रुप (ब) कल्पना चिंतल (टी.ई.सी)	

पखवाडे का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 29.9.2016 को किया गया। इस समारोह में श्रीमती एस.ए. गोखले, हिंदी अधिकारी (डब्ल्यू.टी.पी) को विशेष अतिथि के रूप में बुलाया गया। उन्होंने हिंदी राजभाषा की महिमा और अपने विचारों को प्रकट कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी। पखवाडे के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के विजेताओं को उप महानिदेशक (प.क्षे.) ने पुरस्कारों से सम्मानित किया। इस मौके पर उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा में अधिक से अधिक कामकाज और पत्राचार करने की सलाह दी।

सदस्य (प्रौद्योगिकी), दूरसंचार विभाग द्वारा दस्तावेजों की ऑनलाइन बिक्री हेतु टीईसी पोर्टल का शुभारंभ एवं टी.ई.सी. का मुआयना

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में दिनांक 19 अक्तूबर, 2016 को दस्तावेजों की ऑनलाइन बिक्री हेतु टीईसी पोर्टल का शुभारंभ श्री जी. के. उपाध्याय, सदस्य (प्रौद्योगिकी), दूरसंचार विभाग के कर कमलों द्वारा किया गया ।

यह टीईसी पोर्टल टी.ई.सी. के गुणवत्ता उद्देश्य की उपलब्धि की तरफ एक कदम है । टी.ई.सी. के लगभग 500 दस्तावेज जैसे कि वर्गीय आवश्यकताएं (जी आर), इंटरफेस आवश्यकताएं (आई आर), सर्विस आवश्यकताएं (एस आर) और मानक अब ऑनलाइन उपलब्ध हैं ।

सदस्य (प्रौद्योगिकी) ने अपने संबोधन में दूरसंचार विभाग के विजन और मिशन तथा भारत के वर्तमान दूरसंचार परिदृश्य के बारे में टी.ई.सी. की भूमिका पर चर्चा की । श्री उपाध्याय जी द्वारा एनजीएन ट्रांसपोर्ट प्रयोगशाला, आईपीवी6 प्रयोगशाला और विशिष्ट अवशोषण दर मापन प्रयोगशाला का निरीक्षण किया गया ।

राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान अल्ट परिसर, गाजियाबाद

संस्थान की गतिविधियां

1. **प्रशिक्षणः** संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं:

   क. आईटीएस बैच 2013&2014 के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

   ख. पी & टी भवन निर्माण सेवा (बीडबल्यूएस–सिविल & इलैक्ट्रिकल) बैच 2013 और बीडबल्यूएस – आर्किटेक्चर बैच –2010 के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

   ग. 2013 (आरक्षित सूची), 2014 (आरक्षित सूची) और 2015 बैच के कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारियों (जेटीओ) के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

   घ. दूरसंचार विभाग के अधिकारियों के लिए दूरसंचार एवं आईसीटी से जुड़े विषयों जैसे लॉन्ग टर्म ईवाल्यूशन (एल. टी. ई.) प्रौद्योगिकी, वैध अवरोधन/निगरानी, एकीकृत लाइसेंस, आपदा प्रबंधन में दूरसंचार की भूमिका, दूरसंचार में ऊर्जा प्रबंधन, दूरसंचार का हरितकरण, अक्षय ऊर्जा और ऊर्जा स्टोरेज प्रौद्योगिकियाँ, ईएमएफ के सामर्थ्य मापन उपकरण, सतर्कता & अनुशासनात्मक कार्यवाही आदि पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

   ङ. दूरसंचार & आईसीटी पर अन्य सरकारी विभागों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

2. **आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमः** संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :

क्र. सं.	पाठ्यक्रम का प्रकार	आयोजित पाठ्यक्रमों की संख्या	प्रशिक्षुओं की संख्या	प्रशिक्षु दिवसों की संख्या
1.	आईटीएस प्रशिक्षार्थी अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	33	18 (2012&2013 बैच) + 17 (2014 बैच)	5393
2.	बीडबल्यूएस प्रशिक्षार्थी अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	3	1 (बीडबल्यूएस–2014) 8 (बीडबल्यूएस–2013)	1753
3.	कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारियों (जेटीओ) के इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम	13	8 (2014 बैच) + 20 (2015 बैच)	1577
4.	दूरसंचार विभाग के अधिकारियों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम	8	111	259
5.	कार्यशालाएं/संगोष्ठियाँ	3	35	54
6.	अन्य सरकारी विभागों/एजेंसियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	1	17	34
	कुल संख्या	61	235	9070

3. **भारतीय दूरसंचार सेवा के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों की माननीय राष्ट्रपति से मुलाकात** : भारतीय दूरसंचार सेवा 2014 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों ने राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से दिनांक 22 नवंबर, 2016 को मुलाकात की। इस अवसर पर, राष्ट्रपति महोदय ने प्रशिक्षार्थी

अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि उनके पास अधिकारियों के लिए एक संदेश है जो आने वाले सालों में उनके विचारों और कार्यों में मार्गदर्शन करता रहेगा। किसी और विषयवस्तु से ज्यादा तीन आई, जो कि ईमानदारी (इंटेग्रिटी), नवप्रवर्तन (इनोवेशन) और भारत (इंडिया) हैं, उनके विचारों और कार्यों का मूल आधार होना चाहिए। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उनके उद्देश्यों में सत्यनिष्ठा, कार्यों में नवीनता और उनके द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य और सौंपे गये हर दायित्वों के निर्वाहन के मूल में भारत का हित होना चाहिए। राष्ट्रपति महोदय ने युवा प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल भारत के लोगों को सेवा प्रदान करने की प्रक्रिया में सुधार एवं विस्तार के लिए करने को कहा।

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के साथ भारतीय दूरसंचार सेवा के 2014 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारी

4. **भारतीय दूरसंचार सेवा के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों की माननीय उप राष्ट्रपति से मुलाकातः** भारतीय दूरसंचार सेवा 2014 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों ने 'उप राष्ट्रपति भवन' में भारत के उप राष्ट्रपति श्री एम. हामिद अंसारी से दिनांक 10 जनवरी, 2017 को मुलाकात की। इस अवसर पर उप राष्ट्रपति महोदय ने अपने सम्बोधन में प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को प्रत्येक कार्य एवं जिम्मेदारी को अथक रूप से उत्कृष्टता से करने की सलाह दी। माननीय उप राष्ट्रपति महोदय ने आर्थिक गतिविधियों के डिजिटलीकरण के कारण साइबर सिक्योरिटी के क्षेत्र में बढ़ती चुनौतियों और सुरक्षा चिंताओं का विशेष रूप से उल्लेख किया और प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को स्वयं को उसी अनुरूप तैयार रहने को कहा।

माननीय उप राष्ट्रपति श्री एम. हामिद अंसारी के साथ भारतीय दूरसंचार सेवा के 2014 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारी

5. **आईटीएस – 2012 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों के लिए विदाई कार्यक्रम का आयोजन** : 2012 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों के इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम की समाप्ति पर राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान, गाजियाबाद में एक विदाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री आर. के. मिश्रा, सदस्य (सेवाएं) ने दिनांक 05–01–2017 को विदाई भाषण में प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को निष्ठा से कार्य करने और सौंपे गये सभी कार्यों को उत्कृष्टता से करने को प्रेरित किया। उन्होंने प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को दूरसंचार क्षेत्र में हो रहे नवीनतम प्रौद्योगिकियों के बदलाओं के प्रति जागरूक रहने की सलाह दी क्योंकि यह उन्हें अपने कर्तव्यों का कुशलता से निर्वहन करने में सक्षम बनाएगा।

श्री आर.के. मिश्रा, सदस्य (सेवाएं) और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण के साथ भारतीय दूरसंचार सेवा के 2012 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारी

6. **हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी कार्यशाला व अन्य कार्यः**

1. संस्थान में 15 सितंबर 2016 से 29 सितंबर 2016 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन उत्साहपूर्वक एवं सफलतापूर्वक किया गया। पखवाड़े के दौरान कुल 4 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा समापन समारोह में विजेताओं को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिये गए।

2. दिनांक 29.09.2016 को संस्थान में हिन्दी कार्यशाला–2016 का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के 16 अधिकारियों ने भाग लिया।

3. उत्तर–पूर्वी राज्यों में संचार सुविधाओं का अध्ययन करने के लिए आईटीएस–2014 बैच के प्रशिक्षार्थियों ने एक सप्ताह की अध्ययन यात्रा दिनांक 30 जनवरी, 2017 से 3 फरवरी, 2017 तक की ।

झलकियाँ

श्री आर.के. मिश्रा, सदस्य (सेवाएं) के मुख्य आतिथ्य में आयोजित आई.टी.एस. 2012 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों का विदाई कार्यक्रम

झलकियाँ

हिंदी पखवाड़ा 2016

समापन

दूरसंचार विभाग

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली – 110001
वेबसाईट : www.tec.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय:

पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता
प्रथम तल, दूरसंचार क्यूए बिल्डिंग, ईपी एण्ड जीपी ब्लॉक,
सॉल्ट लेक, सेक्टर 5, कोलकाता–700091

पश्चिमी क्षेत्र, मुम्बई
द्वितीय तल, डी विंग, बीएसएनएल प्रशासनिक भवन,
जुहू रोड़, शान्ता क्रूज (वेस्ट) मुम्बई–400054

दक्षिणी क्षेत्र, बेंगलूरु
द्वितीय मंजिल, जया नगर टेलीफोन एक्सचेंज,
9 वां मेन, चौथा ब्लॉक, जयानगर, बेंगलूरु–560011

उत्तरी क्षेत्र, नई दिल्ली
गेट नं. 5, खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली–110001

Designed & Printed By ROYAL PRESS # 9310132888